

3 लफ़्ज़

लेखक

आदर्श प्रतीक

BFC PUBLICATIONS



BFC PUBLICATIONS



प्रकाशक:

BFC Publications Private Limited
CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar,
Lucknow – 226010

ISBN: 978-93-5509-078-2

कॉपीराइट (©) – **आदर्श प्रतीक** (2021)

सभी अधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है, न पुनरुत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सहित किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में, किसी भी रूप में प्रेषित या पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनाधिकृत कार्य करता है, क्षति के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्भाव में प्रस्तुत की गई है। सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई है। कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्यवाही के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	कहानी	पेज न.
1)	फेसबुक का प्यार	05
2)	प्रतीक्षा और प्यार	68
3)	तेरे बगैर	85

1

फेसबुक का प्यार

प्रतीक - अरे यह फ्रेंड रिक्वेस्ट किसने भेजा है नाम परी आर्या है, किसी ने शायद गलती से भेज दिया हो।

(अगले दिन कॉलेज में)

प्रतीक - सर सुंदरवन डेल्टा संसार का सबसे बड़ा डेल्टा लेकिन यह भारत में है या बांग्लादेश में।

भूगोल मास्टर - प्रतीक यह डेल्टा मुख्य तौर पर दोनों देश में पाई जाती है। इसकी कुछ सीमा बांग्लादेश में तथा कुछ सीमा भारत में है। इस डेल्टा को ब्रह्मपुत्र डेल्टा के नाम से भी जाना जाता है। यह डेल्टा गंगा तथा उसकी सहायक नदियां ब्रह्मपुत्र तथा उसकी सहायक नदियों से मिलकर बनती है। अंत में जाकर के यह डेल्टा बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

प्रतीक - ओके सर।

(भूगोल के मास्टर प्रतीक के प्रश्न को समझा करके सबकी अटेंडेंस लेकर चले जाते हैं।)

परी - प्रतीक ओ प्रतीक

प्रतीक - हां क्या हुआ परी?

परी - मैंने आपको फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजा था आपने एक्सेप्ट किया या नहीं ।

प्रतीक - अच्छा तो वो आपने भेजा था लेकिन यहां क्लास में नाम आपका परी कुमारी है और अपने रिक्वेस्ट परी आर्या से भेजा है।

परी - मेरा नाम परी कुमारी ही है लेकिन हम आर्यावर्त में रहते हैं न तो इसलिए मैंने अपने नाम के साथ परी आर्या लगा लिया।

(टिफिन की घंटी बजती है)

परी - चलो बाहर में बात करेंगे।

प्रतीक - हां

परी - अच्छा आपका नाम भी फेसबुक पर प्रतीक आदर्श है लेकिन कॉलेज में आप प्रतीक मिश्रा ऐसा क्यों?

प्रतीक - मेरा नाम प्रतीक आदर्श में आदर्श मेरे घर का नाम है इसलिए मैंने फेसबुक पर अपने दोनों नाम का मिश्रण कर दिया।
वैसे परी आपका टाइटल क्या है?

परी - परी मिश्रा

प्रतीक - वाह यार टाइटल भी हमारा एक जैसा ही है।

(परी और प्रतीक बहुत सारी बातें करते हैं अल्पविराम की घंटी समाप्त होती है दोनों क्लास में जाते हैं सारे शिक्षक पढ़ाने आते हैं पढ़ा करके चले जाते हैं और छुट्टी हो जाती है)

(प्रतीक के घर पर)

प्रतीक - मां

मां - क्या हुआ बाबू

प्रतीक - खाना लगा दो कहीं जाना है।

मां - कहां जाना है बेटा ?

प्रतीक - कंप्यूटर क्लास जाना है कुछ नोट्स लाने के लिए।

(प्रतीक खाना खाने के बाद अपना फेसबुक अकाउंट ऑन करता है और परी के फ्रेंड रिक्वेस्ट को एक्सेप्ट कर लेता है कुछ ही देर के बाद परी का मैसेज आता है।)

प्रतीक - hello

परी - कहां हो?

प्रतीक - कंप्यूटर क्लास आया हूं कुछ नोट्स लेने के लिए। आप कहां हो ?

परी - घर में हूं ।

प्रतीक - क्या कर रहे हो?

परी - अभी तो बस आपसे बात कर रही हूं।

प्रतीक - खाना हो गया ?

परी - हां हो गया। प्रतीक आपसे एक मदद चाहिए।

प्रतीक - हां कहो परी।

परी - अच्छा प्रतीक आपसे मुझे काम था मैं दो-तीन दिन क्लास नहीं आई थी तो मेरा भूगोल का क्लास का नोट्स छूट गया है तो क्या आप मुझे अपना नोट्स दे सकते हो कि मैं अपनी कॉपी को पूरा कर सकूं।

प्रतीक - बिल्कुल, और कुछ।

परी - नहीं।

प्रतीक - अच्छा परी अभी मुझे कहीं जाना है इसलिए मैं शाम को 7:00 बजे आपसे बात करता हूं तब आप ऑनलाइन आना।

परी - ठीक बाय।

प्रतीक - bye

(शाम को प्रतीक ऑनलाइन नहीं हो पाता है। प्रतीक रात को 9:00 बजे ऑनलाइन होता है। उसको यह बात याद नहीं रही कि उसने परी को कहा था शाम को ऑनलाइन होगा। प्रतीक जब फेसबुक पर ऑनलाइन था तब उसने देखा कि उसका दोस्त विकास भी ऑनलाइन था जो कि उसका क्लासमेट है।)

प्रतीक - hii

विकास - क्या बे कैसा है?

प्रतीक - अबे सुबह ही तो मिले हैं ठीक हूं।

विकास - कहां है?

प्रतीक - घर पर। तू कहां है?

विकास - घर पर ही हूं।

प्रतीक - अच्छा सोमवार को कॉलेज आएगा कि नहीं।

विकास - आऊंगा।

प्रतीक - पढ़ाई हो गई।

विकास - हां हो गई।

प्रतीक - क्या-क्या पढ़ा ?

विकास - यार वह इकोनॉमिक्स में चतुर्थक माध्य वाला मैथमेटिक्स है ना वही बना रहा था देख रहा था ।

प्रतीक - वाह।

(तभी परी का मैसेज आता है।)

प्रतीक - अच्छा विकास बाय

विकास - bye

(परी के मैसेज को देख प्रतीक बहुत खुश होता है)

परी - hii

प्रतीक - hello

परी - आपने तो कहा था कि आप शाम 7:00 बजे ऑनलाइन आओगे आपका अभी 7:00 बज रहा है क्या ?

प्रतीक - सॉरी यार परी, मुझे याद नहीं रहा और मैं अभी पढ़ कर उठा हूँ ना तब जाकर अभी ऑनलाइन आया।

परी - क्या-क्या पढ़ा आपने।

प्रतीक - जियोग्राफी में एग्रीकल्चर पढ़ रहा था। अच्छा आपने पढ़ा।

परी - हां

प्रतीक - क्या पढ़ा आपने।

परी - इतिहास।

प्रतीक - अच्छा अभी क्या कर रहे हो आप।

परी - गाना सुन रही हूँ और आपसे बात कर रही हूँ। आप क्या कर रहे हो।

प्रतीक - मैं बस आपसे बात कर रहा हूँ। अच्छा एक बात पूछ सकता हूँ गुस्सा तो नहीं होंगे आप।

परी - पूछिए।

प्रतीक - अगर आप कल फ्री हो तो क्या शाम को पार्क आ सकते हो ?

परी - हां लेकिन क्यों?

प्रतीक - बस ऐसे ही।

परी - अच्छा ठीक है मैं अपनी फ्रेंड नेहा के साथ आऊंगी।

प्रतीक - ठीक है। अच्छा अभी मैं खाना खाने के लिए जा रहा हूँ नहीं जाऊंगा तो मम्मी गुस्सा करेगी ठीक है तो फिर बाद में बात करते हैं।

परी - ठीक है मैं भी खाना खाने जा रही हूं।

(प्रतीक खाना खाने के बाद थोड़ी देर बात करता है और उसके बाद प्रतीक सो जाता है।)

(अगले दिन कॉलेज में)

परी - प्रतीक

प्रतीक - हां बोलिए।

परी - आपका जियोग्राफी कंप्लीट है न तो क्या आप मुझे दे सकते हो।

प्रतीक - हां हां बिल्कुल मुझे याद नहीं रहा कि आपको कॉपी से लिखना था।

परी - (स्माइल करते हुए) - आपको क्या याद रहता है आप तो टाइम भी भूल जाते हो कि आना शाम में है या रात में।

प्रतीक - (हंसते हुए)- क्या करूं आप जैसी फ्रेंड जो है इसलिए। लीजिए नोट्स।

(शाम में जब प्रतीक पार्क पहुंचता है तो अकेले जाता है और परी भी अकेले ही पार्क आती है यह देखकर के प्रतीक सोचता है उस दिन तो कहा था कि अपनी फ्रेंड को लाऊंगी लेकिन लाई नहीं। कोई नहीं फ्रेंड नहीं है तो और अच्छा हुआ अब मैं आराम से बात कर सकता हूं।)

प्रतीक - आप बहुत शांत रहते हो परी

परी - मैं और शांत (परी हंसती है)

प्रतीक - अच्छा तो क्या आप शांत रहने वाले में से नहीं हो क्या क्रांति करने वाले में से हो क्या?

परी - नहीं मैं क्रांति करने वाले में से भी नहीं हूं लेकिन मैं शांत भी नहीं हूं मेरे घर में मेरे बिना सूना सा हो जाता है क्योंकि मेरी बदमाशी सबको पसंद आती है।

प्रतीक - लेकिन मैंने तो कभी आपको बदमाशी करते हुए देखा ही नहीं इसलिए मुझे लगा कि शायद आप बहुत शांत रहते होंगे।

(प्रतीक को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बात करे?) अच्छा एक बात आपके पापा क्या करते हैं?

परी - बस इस भागदौड़ के शहर में मेरे पापा एक छोटी सी कंपनी में सुपरवाइजर का काम करते हैं। आपके पापा क्या करते हैं आपने तो नहीं बताया?

प्रतीक - मेरे पापा एक छोटी सी कार के गैराज में काम करते हैं वह एक मैकेनिक हैं।

परी - अच्छा आप कितने भाई-बहन हो।

प्रतीक - एक भाई और एक बहन। अच्छा आपके कितने भाई-बहन हैं?

परी - मैं एक भाई और दो बहन हूं जिसमें मैं सबसे छोटी हूं और मेरी बड़ी बहन की शादी हो गई है।

(प्रतीक और परी आपस में बहुत बातें करते हैं)

प्रतीक - अच्छा परी अब शाम ज्यादा हो गई है तो अब हम दोनों को निकलना चाहिए क्योंकि मुझे भी दूर जाना आपको भी दूर जाना है ठीक है फिर मिलते हैं फेसबुक पर।

परी - ठीक है। हां और कल तो महा सप्तमी भी है ना।

प्रतीक - हां, सब बढ़िया आप मेरे इधर तो आओगे ना क्योंकि मेरे इधर बहुत बड़ा मेला लगता है। आपको तो पता ही होगा कि मेरे घर तरफ दुर्गा पूजा का बहुत बड़ा मेला लगता है।

परी - हां जरूर आऊंगी यार।

(कंप्यूटर क्लास में प्रतीक फ्री रहता है फिर अपने फेसबुक में लॉगिन होता है। वह देखता है कि परी का मैसेज आया रहता है और परी भी ऑनलाइन रहती है।)

परी - hello

प्रतीक - hii, आज पार्क में घूमने में मजा आया।

परी - हां

प्रतीक - अभी आप क्या कर रहे हो।

परी - अभी मैं आपसे बात भी कर रही हूं और जियोग्राफी भी लिख रही हूं।

प्रतीक - अच्छा कल आप सुबह मेला देखने के लिए आओगे या शाम में।

परी - जब मम्मी और दीदी बोलेगी तभी जाऊंगी ना उनके साथ।

प्रतीक - अच्छा आप मम्मी और दीदी के साथ आओगे।

परी - हां और आपको भी उनसे मिलवाऊंगी।

प्रतीक - अगर वह गुस्सा हो गई तो।

परी - मैं समझा कर लाऊंगी ना।

प्रतीक - अच्छा ठीक है परी मैं आपसे बाद में बात करता हूं अभी मुझे पावर पॉइंट में कुछ बनाना है तो मैं अभी थोड़ा रुक-रुक कर के आप से बात करूंगा ठीक है।

परी - ठीक है अभी आप अपना काम कीजिए अभी मैं खाना बनाने के लिए जा रही हूं तो हम रात के 10:00 बजे बात करेंगे ठीक।

प्रतीक - ठीक ok bye and miss you

परी - अरे आज शाम में ही मिले और इतना जल्दी मिस करने लग गए आप अच्छा ठीक है मिस यू टू बाय।

(प्रतीक खाना खा कर के 10:15 पर ऑनलाइन होता है)

प्रतीक - hello

परी - hii

प्रतीक - खाना खा लिया आपने।

परी - हां खा लिया आपने खाया।

प्रतीक - हां हो गया। अच्छा जियोग्राफी कंप्लीट हो गया क्या आपका?

परी - नहीं यार।

प्रतीक - कोई बात नहीं।

परी - हां मैं पूजा के बाद दे दूंगी नोटबुक।

प्रतीक - ठीक, अच्छा अभी क्या कर रहे हो आप?

परी - अभी तो मैं जियोग्राफी का लिख रही हूं और आपसे बात कर रही हूं और आप क्या कर रहे हो?

प्रतीक - बस अभी कविता लिख रहा हूं और साथ ही साथ आपसे बात कर रहा हूं और आपको याद भी कर रहा हूं।

परी - अच्छा

प्रतीक - सही में यार आपको याद कर रहा हूं।

परी - क्यों याद कर रहे हैं?

प्रतीक - क्योंकि आप मेरी बेस्ट फ्रेंड हो ना इसलिए आपको याद कर रहा हूं।

परी - बेस्ट फ्रेंड हूं मैं।

प्रतीक - हां

परी - अच्छा ठीक है मैं भी जा रही हूं सोने के लिए।

प्रतीक - ok bye good night and sweet dream and miss you

परी - सेम टू यू यार।

(अगले दिन दुर्गा पूजा का सप्तमी का दिन रहता है प्रतीक तैयार होकर के जल्दी से पंडाल अपने दो तीन दोस्त के साथ जाता है कि तभी परी का मैसेज आता है।)

परी - प्रतीक कहां हो आप?

प्रतीक - मैं तो झूला के पास हूं आप कहां हो?

परी - मैं आपके यहां आई हूं जो आपके यहां का पहला पंडाल है ना वहां पर मैं भी हूं।

प्रतीक - ठीक अच्छा जब आप दूसरे वाले पंडाल में जाओगे ना तब आप मुझे मैसेज कर देना तब मैं आ जाऊंगा आपके पास।

परी - ठीक।

(थोड़ी देर बाद परी का मैसेज आता है।)

परी - प्रतीक मैं दूसरे पंडाल के पास पहुंच गई हूं।

प्रतीक - ठीक है। लेकिन मैं आपको इतने भीड़ में कैसे पहचान लूंगा?

परी - मैं ब्लू कलर का टॉप पहन के आई हूं आप अपनी पहचान बताओ।

प्रतीक - मैं ब्लू और ब्लैक चैक शर्ट में हूँ ओके।

परी - ठीक है जल्दी आइए जहाँ पर स्टार्टिंग पॉइंट है ना पंडाल का मैं वहाँ पर खड़ी हूँ।

(प्रतीक अपने दोस्त विकास, आदित्य, प्रीतम, रोशन के साथ जाता है और जैसे ही भगवान को प्रणाम करता है तो देखता है कि बगल में परी खड़ी होती है। प्रतीक परी को देखते ही रह जाता है। आज परी और भी ज्यादा सुंदर लग रही थी। परी प्रतीक को साथ खड़ा देख विकास ने अपने फोन से प्रतीक और परी का फोटो क्लिक कर लिया।)

परी - प्रतीक मां जी और दीदी पंडाल से बाहर खड़ी हैं मैं भी जा रही हूँ आप भी जल्दी आइए मैं आपको उनसे मिलवाऊंगी आज।

प्रतीक - मुझे थोड़ा डर लग रहा है परी।

परी - आप आओ तो पहले किस बात का डर है?

प्रतीक - हाँ

(प्रतीक मन में- हे दुर्गे महारानी आज तो आप ही बचाओगी अगर इसकी मां और बहन खतरनाक निकली तो आज मेरी तो खैर नहीं।)

(परी पंडाल से बाहर निकलती है प्रतीक अपने दोस्त सबको चलने के लिए बोलता है मगर कोई नहीं जाता तभी प्रतीक देखता है कि परी प्रतीक ! प्रतीक ! बोल करके उसे बुला रही होती है प्रतीक तुरंत जाता है।)

प्रतीक - (हाथ जोड़कर)- प्रणाम

परी - मां यह प्रतीक है यह कविता उपन्यास कहानी नाटक सब लिखता है मैंने इसके बारे में आपको बताया था न।

परी की मां - प्रतीक , आपका पूरा नाम क्या है ?

प्रतीक - प्रतीक मिश्रा ।

परी की मां - अच्छा, घर कहां हैं आपका?

प्रतीक - मेरा घर लगमा, घनश्यामपुर है।

परी की मां - दरभंगा में जो है।

प्रतीक - हां

परी की दीदी - अच्छा आप परी के क्लासमेट भी हो।

प्रतीक - हां

परी की दीदी - आप इसको देखते रहिएगा पढ़ने में भी इसका हेल्प करा दीजिएगा।

प्रतीक - जरूर।

परी - अच्छा प्रतीक तो फिर हम चलते हैं फिर मिलेंगे।

परी - ठीक।

(प्रतीक अपने दोस्त के पास आ जाता है।)

विकास - क्या प्रतीक हो गया अपनी दोस्त परी से मुलाकात।

प्रतीक - हां हो गया।

प्रीतम - अबे विकास दोस्त नहीं, उसकी मम्मी और दीदी से मिलने के लिए गया था।

विकास - कोई खास बात है क्या?

प्रीतम - अपने और परी से शादी के रिश्ते की बात के लिए।

आदित्य - वाह! प्रतीक तेरा सही है। इसी पंडाल में बातचीत हो गई लगे हाथ फेरे भी कर ले।

(सब हंसने लगते हैं)

प्रतीक - यार हम दोनों बस दोस्त हैं यार और कुछ नहीं।

रोशन - यार चिढ़ क्यों रहा है? हम बस मजाक कर रहे हैं।

(रात में परी ऑनलाइन होती है और प्रतीक को स्माइल का इमोजी भेजती है।)

प्रतीक - हेल्लो यार

परी - कहां हो आप?

प्रतीक - मेला में हूं अभी।

परी - वाह अभी तक मेला में हो आप। घर में मम्मी को बताया कि नहीं?

प्रतीक - हां फोन करके बता दिया है कि आज लेट हो जाएगा।

परी - अभी तो आप अपने दोस्त सबके साथ होंगे।

प्रतीक - हां

परी - जब आप घर पहुंच जाओगे मैसेज करना तब बात करूंगा मैं।

प्रतीक - कोई बात क्या परी?

परी - बात तो कोई नहीं बस दो इकोनॉमिक्स के सवाल पूछने थे?

प्रतीक - हां पूछ लीजिए यार।

परी - कोई परेशानी नहीं है न आपको।

प्रतीक - नहीं आप क्वेश्चन भेज दीजिए मैं घर जाकर सॉल्यूशन भेज दूंगा।

परी - ठीक है, Bye

(परी प्रतीक को दो क्वेश्चन भेज देती है।)

विकास - अरे चल यार पार्टी करते हैं।

प्रतीक - नहीं यार रात ज्यादा हो गई है कल मिलते हैं।

विकास - ठीक है यार। कल कितने बजे आऊं फिर?

प्रतीक - सुबह में फोन करना फिर बताता हूं भाई।

(विकास प्रतीक के घर तक बाइक से छोड़ आता है।)

प्रतीक की मां - बाबू कहां थे इतने समय तक, जल्दी आ जाया करो घर।

प्रतीक - मां मैं मेला में था इसलिए लेट हो गया।

प्रतीक की मां - अच्छा ठीक है। चलो खाना खा लो बेटा।

प्रतीक - मां खाना खाकर आया हूं।

प्रतीक की मां - थोड़ा सा खा ले बेटा।

प्रतीक - ठीक है लगा।

(प्रतीक की मां प्रतीक के लिए खाना लगा देती है और प्रतीक खाता है।)

प्रतीक की मां - ठीक है बाबू मैं जा रही हूं सोने, और ज्यादा देर फोन मत चलाना और जल्दी सो जाना।

(प्रतीक खाना खाने के बाद परी से आए हुए वह दोनों क्लेशन को करता है और उस क्लेशन का आंसर करने के बाद वह दोबारा ऑनलाइन होता है तो वह देखता है कि परी का मैसेज आया हुआ रहता है।)

परी - हो गया क्या?

प्रतीक - हां (पिक्चर भेज देता हूं।)

परी - थैंक्स प्रतीक।

प्रतीक - परी अब हम दोनों आराम से बात कर सकते हैं अब मैं घर आ गया हूं।

परी - हां।

प्रतीक - आज तो मैं बहुत डर गया था जब आपने मुझे अपनी मम्मी और दीदी से मिलाया क्योंकि मुझे समझ में ही नहीं आ रहा था कि मैं उनके सामने क्या बोलूंगा?

परी - वह तो आपके हाव-भाव से ही पता चल रहा था कि आप डर से गए हैं।

प्रतीक - अच्छा आपकी मम्मी-दीदी मेरे बारे में कुछ बोल भी रही थी क्या कि मुझे देखकर उन्हें कैसा लगा या फिर कुछ भी।

परी - हां मम्मी बोल रही थी कि लड़का तो बहुत अच्छा है लेकिन दीदी पूछ रही थी कि लगता तो यह लड़का हीरो जैसा है लेकिन डर तो ऐसे रहा था जैसे कि विलेन है।

प्रतीक - अच्छा तो दीदी की बात पर आपने क्या जवाब दिया।

परी - मैंने कहा कि फर्स्ट टाइम कोई किसी अनजान से मिलता है ना तो थोड़ा मन में डर तो रहता ही है दीदी लेकिन जो भी हो यह है तो क्लास का हीरो ही।

प्रतीक - फिर दीदी क्या बोली?

परी - दीदी बोली कि फेस से दिखने में तो हीरो जैसा लग रहा था लेकिन शांत तो ऐसे खड़ा था जैसे कि कोर्ट में वकील ने इससे सवाल पूछ लिया हो और इसको कुछ समझ में ना आ रहा हो हीरो कम विलेन ज्यादा लग रहा था।

प्रतीक - अच्छा आपका नंबर क्या है?

परी - क्यों?

प्रतीक - बस अभी आपसे बात करना था।

परी - ओके 8888899999।

प्रतीक - अच्छा अभी मैं आपको फोन कर रहा हूं प्लीज-प्लीज आप मेरे लिए फोन उठा लेना ।

(फोन का रिंग होता है।)

परी - हैलो

प्रतीक - हां बोलिए।

परी - क्या कहूं?

प्रतीक - आपकी दीदी ने तो मुझे विलेन बना दिया।

परी - नहीं यार जब उन्होंने यह बात बोला ना कि जो कोर्ट में वकील की तरह सवाल पूछे जाने की तरह आप खड़े थे तो मैंने दीदी को कहा कि हीरो को दिखाने की जरूरत नहीं होती कि वह हीरो है।

प्रतीक - वाह मेरा पक्ष इतना ज्यादा लिया जा रहा है ।

परी - नहीं यार आप मेरे बेस्ट फ्रेंड जैसे हो तो आपके लिए तो इतना तो मैं कर ही सकती हूं ना।

प्रतीक - अच्छा मैं आपका बस एक बेस्ट फ्रेंड के जैसा हूं ।

परी - नहीं यार बेस्ट फ्रेंड ही हो।

प्रतीक - अच्छा कल आप घूमने के लिए आओगे या नहीं कल तो अष्टमी है कल तो आओगे आप जरूर ही।

परी - हां आऊंगी न।

प्रतीक - किसके साथ।

परी - अपने दोस्तों के साथ।

प्रतीक - कब तक आओगे?

परी - दोपहर में आऊंगी।

प्रतीक - अच्छा मेरा एक रिक्वेस्ट है क्या आप मानोगी?

परी - बोलिए।

प्रतीक - कल आप प्लीज 9:00 बजे तक आ सकते हो मंदिर में लेकिन अकेले प्लीज।

परी - हां कोशिश करती हूं।

प्रतीक - यार प्लीज।

परी - ओके आऊंगी।

प्रतीक - अच्छा तो ठीक है अभी मैं जा रहा हूं सोने के लिए नहीं तो अगर मम्मी उठ गई और देख लिया कि मैं अभी फोन से बात कर रहा हूं तो मुझसे फोन ले लेगी और फिर मैं कैसे बात करूंगा आपसे?

परी - ओके।

प्रतीक - बाय, मिस यू यार

परी - आज ही तो मिले थे अच्छा मिस यू टू।

(सुबह प्रतीक जल्दी उठ गया और तैयार होकर के 8:30 बजे से इंतजार करने लग गया परी के मैसेज का।)

परी - Good Morning

प्रतीक - Very Good Morning

परी - मैं आपके घर के पास वाले मंदिर में पहुंच गई हूं आप कहां हो जल्दी आ जाओ।

प्रतीक - ओके।

(प्रतीक जल्दी से मंदिर जाता है वह परी को देखते ही रह जाता क्योंकि परी आज बहुत अच्छे से बन कर आई थी उसे लग रहा था कि जैसे इंद्र भगवान स्वयं अपनी अप्सरा को भेज रखे हो।)

प्रतीक - परी पता नहीं लेकिन मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूं कि आज आप बहुत सुंदर लग रहे हो।

परी - अच्छा।

प्रतीक - हां यार रियली आज आप बहुत सुंदर लग रहे हो।

परी - हां आप जैसे इतने बड़े डिस्ट्रिक्ट टॉपर के साथ जो घूम रही हूं तो थोड़ा सज धज के तो आना ही होगा ना।

प्रतीक - यार मैं वो भी टॉपर बस भगवान की कृपा है।

परी - हां।

प्रतीक - वैसे आप भी तो टॉपर हो मैं आपके साथ घूम रहा हूं न।

परी - मानती हूं मैं टॉपर हूं लेकिन आप अव्वल टॉपर हो न।

प्रतीक - हां चलिए मंदिर चलते हैं।

(मंदिर में प्रतीक और परी जाकर पूजा करते हैं और उसके बाद नाश्ता करके बात कर रहे होते हैं।)

परी के घर से फोन आता है ...

परी - हां दीदी।

दीदी - कहां है ?

परी - आ रही हूं दीदी।

दीदी - जल्दी आ।



परी - प्रतीक अब मुझे जाना होगा क्योंकि घर से फोन आ रहा है ठीक है फिर बाद में मिलते हैं।

प्रतीक - ठीक है। लेकिन बहुत जल्दी जा रहे हो आप यार ऐसा कैसे चलेगा।

परी - प्रतीक मैं 3 घंटे के बाद तो आ ही जाऊंगी अपने दोस्तों के साथ घूमने के लिए तब बात करेंगे।

प्रतीक - ठीक लेकिन रुको मैं बाइक लेकर आता हूं मैं आपको घर तक छोड़ देता हूं।

परी - थैंक्स प्रतीक। लेकिन अभी मैं तुम्हारे साथ बाइक से जाऊंगी तो फिर लोग देखेंगे तो क्या सोचेंगे इसलिए फिर कभी?

प्रतीक - ठीक है लेकिन मैं आपके साथ अभी थोड़ी दूर तक जा सकता हूँ न ।

परी - हां क्यों नहीं?

प्रतीक - अब जब आप आओ न तो प्लीज़ मुझे फोन कर देना क्योंकि फेसबुक में मैं ऑनलाइन नहीं रहा तो आपके आने का पता नहीं चलेगा।

परी - ओके लेकिन कल मैंने आपका नंबर किस नाम से सेव किया था वो याद नहीं है ।

प्रतीक - रुकिए मिस कॉल करता हूँ।

परी - ओके।

(प्रतीक परी को मिस कॉल करता है नाम आता है "दोस्त". प्रतीक अपने फोन में देखता है तो 6 विकास की मिस कॉल आई हुई रहती है वह सोचता है शायद ऐसे ही कर रहा होगा इसलिए वह उसे फोन नहीं करता है)

प्रतीक - वाह बहुत अच्छा नाम रखा है आपने मेरा दोस्त।

परी - हां प्रतीक नाम से सेव करती तो कभी कोई देख लेता तो पूछता इसलिए दोस्त से सेव कर लिया।

प्रतीक - अच्छा आपका घर नजदीक आ गया है तो मैं फिर चलता हूँ ।

परी - हां ।

प्रतीक - ओके बाय मिस यू

परी - यू टू।

(परी और प्रतीक मंदिर से ही हाथ में हाथ डाल करके आ रहे थे जब प्रतीक ने देखा कि परी का घर सामने आ गया तो दोनों ने अपना हाथ अलग कर दिया ताकि कोई उन्हें देख ना ले।)



(प्रतीक घर पर)

मां - कहां थे बाबू इतना लेट हो गया आने में।

प्रतीक - मां मंदिर में था।

मां - हो गया पूजा पाठ चलो अब नाश्ता कर लो।

प्रतीक - मां मैं नाश्ता करके आया हूं विकास के साथ।

(हॉर्न की आवाज़ आती है। विकास घर आता है)

विकास - नमस्ते चाची। प्रतीक तुझे सुबह से फोन कर रहा था तू फोन क्यों उठा रहा था।

मां - प्रतीक तूने तो कहा कि तू विकास के साथ था लेकिन विकास कुछ और बोल रहा है।

प्रतीक - मां मैं इस विकास नहीं मेरा एक और दोस्त है न विकास उसकी बात कर रहा था (प्रतीक मन में इस विकास को भी अभी ही आना था।)

विकास - प्रतीक शाम में घूमने चलें।

प्रतीक - चलूंगा जरूर।

विकास - ठीक है तो शाम में आता हूं।

(दोपहर को फोन बजता है प्रतीक फोन जब रिसीव करता है तो देखता है कि परी का कॉल रहता है)

प्रतीक - हैलो

परी - प्रतीक मैं घर से निकल गई हूं आप कहां हो।

प्रतीक - बिस्तर पर।

परी - वो क्यों?

प्रतीक - सो रहा हूं।

परी - मुझे आपने घूमने के लिए बुला लिया आप खुद सो रहे हो।

प्रतीक - ठीक है आप मंदिर पहुंचों में आ रहा हूं।

परी - ठीक लेकिन जल्दी आना।

प्रतीक - हां आ रहा हूं।

(प्रतीक अपने दोस्त विकास को फोन करता है और कहता है कि वह जल्दी आ जाए तब वह दोनों घूमने के लिए जाएंगे। प्रतीक बाइक से जल्दी से मंदिर के पास जाता है बाइक को पार्किंग में पार्क करके परी के पास जाता है। परी अपने दोस्तों के साथ आई हुई रहती है। प्रतीक भी विकास के साथ परी के पास जाता है।)

परी - क्या हुआ?

प्रतीक - कुछ नहीं।

परी - तो ऐसे क्यों देख रहे हैं?

प्रतीक - यार एक बात पूछना था।

परी - पूछिए।

प्रतीक - ये सुंदरता आपकी नेचुरल है या फैशन का कमाल है।

परी - नेचुरल है यार। अच्छा इससे मिलिए ये है मेरी फ्रेंड नेहा।

प्रतीक - हेल्लो।

नेहा - hii

प्रतीक - कैसी हैं नेहा जी?

नेहा - बहुत बढ़िया आप बताओ।

प्रतीक - बस अच्छा है सब इससे मिलिए ये है मेरा फ्रेंड विकास।

नेहा - हेल्लो विकास।

विकास - hii

परी - अच्छा प्रतीक एक बात बताइए कल आप मम्मी और दीदी से बात करते समय क्यों डर रहे थे?

प्रतीक - पता नहीं क्यों कल मैं इतना ज्यादा किसी से बात करते हुए डर रहा था शायद मैं इसलिए भी डर रहा था क्योंकि आपकी मम्मी और आपकी दीदी मेरी तरफ देख रही थी मुझे थोड़ा अजीब लग रहा था कि मैं फर्स्ट टाइम दोनों से बात कर रहा था।

परी - ओ यार बाबू प्रतीक डर गए।

(ये कहते ही परी, नेहा विकास सब हंसने लगे।)

प्रतीक - बाबू वो भी हम।

परी - हां

प्रतीक - परी आपके मुंह पर कुछ लगा हुआ है।

परी - क्या लगा है?

प्रतीक - कुछ लगा है।

परी - तो साफ कर दीजिए न।

प्रतीक - मैं कर दूँ।

परी - हां आप नहीं तो कौन?

(विकास और नेहा थोड़े पीछे थे नेहा को कुछ खरीदना था तो वो देख रही थी। प्रतीक और परी उससे आगे थे।)

प्रतीक - साफ कर दूँगा लेकिन थोड़ा साइड आइए।



(प्रतीक परी को लेकर के साइड में एक बगीचे की तरफ आ जाता है और उसका मुंह साफ कर देता है इसी बहाने परी का हाथ प्रतीक पकड़ लेता है।)

परी - क्या हुआ?

प्रतीक - कुछ नहीं।

परी - तो मेरा हाथ क्यों

प्रतीक - अच्छा अब आपके हाथ को भी नहीं पकड़ सकता।

परी - पकड़ सकते हैं लेकिन सबके सामने क्यों?

प्रतीक - ठीक है छोड़ता हूं। लेकिन एक बात कहनी है आपसे।

परी - कहिए।

प्रतीक - आज आप बहुत सुंदर लग रहे हो।

परी - ये तो आप रोज बोलते हो। कुछ नया बताओ।

प्रतीक - नया ये कि आज आपकी सुन्दरता से कहीं लड़ाई न हो जाए लड़कों में।

परी - अच्छा जी, बहुत हो गया तारीफ अब चलिए नहीं तो दोनों परेशान हो जाएंगे कि हम कहां चल गए।

प्रतीक - कौन दोनों?

परी - नेहा और विकास। इतनी जल्दी भूल गए।

प्रतीक - भूला नहीं आपका रूप ही कुछ ऐसा है कि सब कुछ भूल जाते हैं हम।

परी - मेरी सुन्दरता कहीं भारी ना पड़ जाए।

प्रतीक - नहीं चलो यार अब नहीं तो विकास चिल्ला कर पागल कर देगा।

(दोनों बगीचे से बाहर आते हैं और दोनों नेहा और विकास के पास जाते हैं जहां पर खड़े रहते हैं।)

विकास - कहां था यार प्रतीक।

प्रतीक - अरे कुछ नहीं परी के मुंह में कुछ लगा था तो वही हटा रहा था।

विकास - हटा रहा था या कुछ लगा रहा था।

प्रतीक - नहीं यार।

नेहा - चलें फिर आगे।

परी - चल यार।

प्रतीक - हां चलिए।

(मां दुर्गा की मूर्ति के सामने प्रतीक और परी साथ में खड़े होकर दोनों प्रणाम करते हैं और फिर दोनों घूमने जाते हैं। सामने झूला होता है परी ज़िद करने लग गई कि प्रतीक चलो झूले में झूलते हैं लेकिन प्रतीक फिर भी नहीं मान रहा फिर बहुत मानने कहने के बाद परी ने प्रतीक को मना लिया प्रतीक झूला झूलने के लिए गया।)

प्रतीक - आप भी न बहुत

परी - क्या बोलिए?

प्रतीक - कुछ नहीं।

परी - ये दोनों क्यों नहीं आए?

प्रतीक - शायद वो चाहते हों कि हम दोनों झूला झूले और वो अपने प्यार का पंचनामा करें।

परी - नहीं यार ऐसा कुछ नहीं है।

(झूला जैसे ही शुरू होता है परी प्रतीक के बगल में बैठ जाती है।)

प्रतीक - डर लग रहा है क्या?

परी - नहीं।

प्रतीक - तो फिर मेरे बगल में।

परी - क्यों अब आपके साथ मैं नहीं बैठ सकती हूं क्या?

प्रतीक - बैठ सकते हैं।

(झूला चलने लगता है अपनी रफ्तार में, परी प्रतीक का हाथ जोर से पकड़ लेती है।)

प्रतीक - डर लग रहा है क्या बाबू?

परी - नहीं।

प्रतीक - तो फिर इतनी जोर से हाथ क्यों पकड़ रखा है?

परी - बस ऐसे ही।

(झूला कुछ देर बाद रुकता है दोनों उतरते हैं।)

प्रतीक - अब डर गया का मन से।

परी - मैं नहीं डरती प्रतीक।

प्रतीक - तो फिर हाथ क्यों पकड़ रखा था?

परी - बस मन किया।

(प्रतीक विकास परी नेहा सब जगह घूम कर उसके बाद नाश्ता कर लेते हैं। प्रतीक और परी साथ में ही नाश्ता कर रहे होते हैं क्योंकि विकास कह रहा था कि दोनों साथ में ही नाश्ता करो ना यार क्या अलग-अलग बैठकर के अलग-अलग जगह खाओगे। विकास की बात को दोनों टाल नहीं सके और दोनों एक ही साथ एक ही प्लेट में नाश्ता करने लगे।)

परी - अच्छा प्रतीक अब मैं चलती हूं। 8 बजने वाला है।

प्रतीक - चलो मैं आपको छोड़ देता हूं।

नेहा - परी तू प्रतीक के साथ चली जा मम्मी अभी यहां आने वाली हैं तो मैं मम्मी का इंतजार करके उनके साथ चली जाऊंगी।

विकास - यार प्रतीक मुझे भी घर जाना है। कुछ काम है। लेकिन तू बाइक की चाभी ले जा परी को बाइक से पहुंचा देना।

परी - नहीं विकास आप जाओ मैं चल जाऊंगी। आपको कुछ जरूरी काम भी होगा।

प्रतीक - विकास तू पहुंच मैं तुझसे मिलता हूं।

(नेहा विकास चले जाते हैं।)



प्रतीक - पता नहीं दोनों क्यों चले गए?

परी - कुछ काम होगा।

प्रतीक - आप चलिए आपको काम होगा और लेट भी हो जाएगा।

परी - हां, चलिए।

प्रतीक - आज तो बच गया।

परी - किससे?

प्रतीक - लफुआ, लफंगा लड़के से।

परी - क्यों ?

प्रतीक - आज आपकी सुंदरता पर लड़ाई हो जाती तो फिर ...

परी - अच्छा आज इतनी सुन्दर लग रही हूं क्या?

प्रतीक - हां यार।

परी - मुझे तो नहीं लग रहा।

प्रतीक - आज आप और चांद दोनों की सुंदरता कमाल है।

परी - वाह बहुत कर लिए तारीफ।

प्रतीक - अच्छा परी आप अपनी सारी बात मुझसे रिलेटेड किसे बताते हैं?

परी - दीदी को।

प्रतीक - अच्छा।

परी - आप किसको बताते हो ?

प्रतीक - घर पर किसी को नहीं लेकिन विकास को बताता हूं अब आपको बताऊंगा।

परी - मुझे क्यों ?

प्रतीक - क्योंकि आप मेरी बेस्ट फ्रेंड हो।

परी - कौनसा वाला फेसबुकिया वाला या फिर सच्चा वाला।

प्रतीक - सच्चा वाला।

परी - अच्छा आपको कौन सा कलर पसंद है?

प्रतीक - रॉयल ब्लू या फिर ब्लैक।

परी - मुझे भी यार।

प्रतीक - अच्छा।

परी - हां हमारी पसंद कितनी मिलती है।

प्रतीक - हां।

परी - अच्छा आपको खाने में क्या पसंद है?

प्रतीक - वेज में छोले भटूरे और नॉन वेज में मछली भात।

परी - अच्छा। मुझे बस वेज में आलू सोयाबीन, आलू चने, छोले, पनीर और पराठे बहुत पसंद हैं। मैं नॉन वेज नहीं खाती।

प्रतीक - अच्छा। आपका फेवरेट सब्जेक्ट।

परी - राजनीति विज्ञान। और आपका।

प्रतीक - इतिहास।

परी - वाह मेरे इतिहासकार बहुत आगे जाएंगे इतिहास में आप।

प्रतीक - धन्यवाद।

परी - वैसे एक अजीब सवाल है कि आपकी शादी के बाद वाइफ के साथ मोहनजोदड़ो जाओगे या कहीं और?

प्रतीक - (हंसते हुए) - नहीं उसके साथ तो मनाली या कहीं और जाऊंगा जहां वो कहेगी।

परी - अच्छा, मुझे मेरे होने वाले पति के साथ बहुत घूमना है और मनाली भी जाना है।

प्रतीक - अच्छा। आपका घर नजदीक आ गया है परी तो फिर मैं चलता हूं।

परी - एक बात कहूं।

प्रतीक - हां कहिए।

परी - वैसे आज आप भी बहुत अच्छे लग रहे हैं चुरा लिया है आपने कितनों का दिल।

प्रतीक - आपका दिल तो नहीं न चुराया।

परी - मेरे तो फ्रेंड हो आप तो मेरा दिल थोड़ी न आप चोरी करोगे लेकिन जिस लड़की ने देखा होगा उसका दिल जीत लिया होगा आपने।

प्रतीक - नहीं चुराना तो किसी का भी दिल नहीं है।

परी - वैसे नेहा भी आपको देख कर कह रही थी कि बहुत हैंडसम है लड़का।

प्रतीक - थैंक्स कह दीजिएगा उसे।

परी - ओके बाय।

(परी जाने लगती है लेकिन प्रतीक वहीं खड़ा रहता है परी फिर भाग कर वापस आती है और प्रतीक को गले लगा लेती है और फिर वह चली जाती है दोनों एक-दूसरे को देखते हैं छोटी सी मुस्कान लेकर के परी आगे बढ़ती रहती है।)

परी - मेरे बेस्ट फ्रेंड बने इसके लिए ये।

प्रतीक - हां।

परी - वैसे हो आप बहुत बेस्ट यार, फेसबुक पर जरूर ऑनलाइन आना।

प्रतीक - ठीक बाय और मिस यू।

परी - आई मिस यू सो मच।

(प्रतीक विकास को फोन करता है और प्रतीक विकास को मेला में बुलाता है। प्रतीक और विकास मेले में घूमते हैं और फिर खाना खाने के बाद घर के लिए निकल जाते हैं। रात को जब प्रतीक अपना फेसबुक अकाउंट ऑन करता है तो परी का मैसेज आया हुआ रहता है कि यार मैं आपको बहुत मिस कर रही हूं। प्रतीक देखता है कि परी ऑनलाइन ही रहती है, प्रतीक उसे मैसेज करता है।)

प्रतीक - इतना मिस मत किया करो।

परी - बस आज कर रही हूं शायद जब आपको गले लगाया तब दिल का कनेक्शन एक अच्छे दोस्त के तौर पर बन गया।

प्रतीक - हां। अगर इतना मिस कर रहे हैं तो कॉल कर लीजिए।

(परी ने प्रतीक को फोन किया।)

परी - हैलो।

प्रतीक - जी बोलिए मिस कर रहे हैं तो आ जाऊं आपके पास।

परी - नहीं यार घर पर सब हैं।

प्रतीक - अच्छा।

परी - प्रतीक कुछ मेरा जरूरी सवाल था जिसमें मैं कंप्यूज हो गई थी तो वह मुझे आपसे पूछना था क्या अभी आप फ्री हो।

प्रतीक - मैं मेला से निकल गया हूं अब आप पूछिए।

परी - ये सप्तावहिनी राज्य में सिक्किम भी है क्या ?

प्रतीक - नहीं यार, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, असम, अरुणाचल प्रदेश है ।

परी - अच्छा एक और सवाल है।

प्रतीक - क्या पूछिए?

परी - क्या आप मुझसे एक वादा कर सकते हो कि आप मेरे बेस्ट फ्रेंड बनकर ही रहोगे यह वादा आप मुझसे कर सकते हो क्या?

प्रतीक - हां यार प्रॉमिस।

परी - यार प्लीज आप पहले इंसान हो जिस पर मुझे बहुत ही ज्यादा भरोसा है तो प्लीज मेरे भरोसे को मत तोड़ना।

प्रतीक - नहीं यार ऐसा कभी नहीं होगा। अच्छा परी मैं घर पहुंचने वाला हूं तो मैं 10 मिनट बाद ऑनलाइन आऊंगा तो आप भी 10 मिनट बाद ऑनलाइन होना ठीक है बाय मिस यू।

परी - बाय मिस यू टू ।

(प्रतीक के घर पर)

प्रतीक की मां - आज कल कहां रहते हो बेटा लाल इतना लेट आ रहे हो मैं खाना लगा रही हूं खा लो।

प्रतीक - मम्मी साल में एक ही त्यौहार तो आता है जिसमें कि इतने इंजॉय करते हैं अब इस त्यौहार में भी लेट ना हो तो क्या करूंगा वैसे मम्मी मुझे भूख नहीं आज मैं खा कर आया हूं।

प्रतीक की मां - थोड़ा सा खा ले तो बेटा थोड़ा सा खा ले।

प्रतीक - मम्मी भूख तो बिल्कुल नहीं है लेकिन आप बोल रहे तो थोड़ा सा खा लूंगा।

(प्रतीक की मम्मी प्रतीक के लिए खाना लाती है प्रतीक खाना खा लेता है। खाना खाने के बाद वह अपने रूम में चला जाता है प्रतीक अपना फेसबुक अकाउंट ऑन करता है तो देखता है कि परी का मैसेज आया हुआ रहता है कि प्रतीक 10 मिनट आपका अब तक नहीं हुआ क्या 10 मिनट बोल करके आप मुझे 20 मिनट से इंतजार करवा रहे हो।)

प्रतीक - सॉरी यार खाना खा रहा था तो थोड़ा लेट हो गया।

परी - हां ठीक है। कॉल पर बात करें।

(प्रतीक और परी बात करते रहते हैं और आधे घंटे के बाद)

प्रतीक - अच्छा कल आप 9 बजे पार्क आना।

परी - कहां पर?

प्रतीक - जुबिली पार्क में।

परी - ठीक है , bye miss you

प्रतीक - Miss You To

(अगले दिन प्रतीक तैयार होकर के 8:30 बजे परी के घर के रास्ते से जा करके खड़ा रहता है और परी का इंतजार करने लगता है वह जैसे ही आएगी वह दोनों बाइक से जुबली पार्क जाएंगे । प्रतीक के पास परी का कॉल आता है)

प्रतीक - हैलो

परी - हैलो, मैं निकल गई हूं आप कहां हो?

प्रतीक - मैं चौराहे पर ही आपका इंतजार कर रहा हूं।

परी - ठीक है।

(परी के आज आने के बाद दोनों बाइक से जुबली पार्क के लिए निकल जाते हैं प्रतीक अपनी बाइक को पार्किंग में खड़ा करके परी

के साथ अंदर जाता है दोनों शांत सी जगह देखते हैं जहां पर दोनों आपस में बैठकर शांति से बात कर सके।)

प्रतीक - अच्छा आपको कभी किसी से प्यार हुआ है क्या?

परी - नहीं। आपको हुआ क्या प्रतीक किसी से प्यार?

प्रतीक - नहीं, अच्छा परी अगर आपको कोई लड़का प्रपोज करे तो आप क्या करोगे?

परी - पहले तो मैं यह देखूंगी कि वह लड़का कैसा है मेरे लायक है मेरे से अच्छे से बात करता है सबसे अच्छे से बर्ताव करता है तब तो मैं उस लड़के को अपने दिल में सेव कर लूंगी लेकिन अगर कोई बेकार टाइप के लड़के ने मुझे प्रपोज किया तो मैं कभी एक्सेप्ट नहीं करूंगी क्योंकि मुझे ऐसा लड़का चाहिए जो अच्छे से सबसे बात करता हो लोगों के साथ उसका नेचर बहुत अच्छा हो और सबसे बड़ी बात वो मेरा ख्याल रखता हो।

प्रतीक - अच्छा परी आपको तो यह बात पता ही होगी कि कॉलेज का हाल कैसा है बहुत लड़के आपसे प्यार करते हैं कुछ लड़कों ने आपको आकर कहा भी होगा मैंने देखा है और आप ऐसा तो नहीं करती।

परी - हां लेकिन उनमें वो बात नहीं है जिससे मैं ये कह सकूँ की अच्छा है।

प्रतीक - अच्छा परी कभी आपको ऐसा नहीं लगा कि आपको किसी से प्यार करना चाहिए।

परी - लगा लेकिन ऐसा लड़का मिला नहीं।

प्रतीक - अच्छा।

(प्रतीक और परी प्यार से संबंधित बहुत सारी बातें करते हैं उसके बाद दोनों एक दूसरे के पास्ट के बारे में पूछते हैं दोनों घर परिवार के बारे में पूछते हैं। क्योंकि वह महानवमी का दिन रहता है तो प्रतीक परी को लेकर के मंदिर भी जाता है मंदिर में दोनों दर्शन करके फिर घर के लिए निकल जाते हैं।)

(वो महानवमी की संध्या 7 बजे का समय रहता है तो प्रतीक विकास के साथ मेले में गया हुआ होता है मेले में प्रतीक के मित्र सब प्रतीक को बुलाते हैं और सब घूमते हैं रात को जब सब घूम करके वापस आते हैं तब उन्हें चार लड़के मिलते हैं।)

पहला लड़का - अबे तू प्रतीक है न, परी का आशिक्र।

प्रतीक - तू कौन?

दूसरा लड़का - मैं कौन हूं यह जानना तेरे लिए जरूरी नहीं है प्रतीक बस इतना जान लो कि परी का पीछा छोड़ दे नहीं तो तेरे लिए अच्छा नहीं होगा।

विकास - क्या अच्छा नहीं होगा? साले ऐसा मारूंगा न कि खुद को भूल जाएगा।

पहला लड़का - प्रतीक ये तेरा दोस्त जो है न विकास बहुत ज्यादा बोलता है। इसे समझा की इस वक्त तुम्हें कोई नहीं बचाएगा।

विकास - तुझे लड़ना है क्या बता?

प्रतीक - विकास रुक जा।

दूसरा लड़का - प्रतीक हमारा काम है तुझे समझाना अब तू नहीं समझेगा तो तेरी मर्जी लेकिन कल को अगर तुम्हारे साथ या इस खास दोस्त विकास के साथ कुछ गलत होता है तो फिर कोई नहीं बचा सकता ना।

प्रतीक - देख मैं भी तुझे एक बात अच्छे से समझाना चाहता हूं मुझे क्या विकास को तुम छू नहीं सकता रही बात परी की तो मैं उसे प्यार करूंगा क्योंकि कुछ भी हो वह है तो मेरा प्यार ही ना तो इतना ज्ञान देने के लिए मत आया करो और हां जब होगा ना कुछ हमें तो हम देख लेंगे।

(विकास ने अपने फोन से आदित्य और प्रीतम को मैसेज कर दिया था कि जल्दी आ जाओ झगड़ा हो गया है। कुछ देर में आदित्य और प्रीतम बैट और विकेट के साथ पहुंच जाते हैं फिर दोनों गुट में बहुत तगड़ी लड़ाई होती है और अंत में वह चारों भाग जाते हैं।)

प्रतीक - कहां भाग रहा है आ छीन न परी को मुझसे बेटा कुछ नहीं कर सकते तुम।

विकास - छोड़ दे प्रतीक भाग गए साले।

प्रतीक - चल यार। वैसे विकास तूने इन्हें बुलाया कैसे?

विकास - ये आदित्य फेसबुक पर ऑनलाइन था तो मैसेज किया तो दोनों आ गए।

प्रतीक - थैंक्स यार आदित्य और प्रीतम ।

(फोन की घंटी बजती है प्रतीक देखता है परी का फोन आया हुआ रहता है)

प्रतीक - हेल्लो

परी - हेल्लो प्रतीक मैं मम्मी दीदी के साथ आज फिर मंदिर में घूमने आयी हूँ।

प्रतीक - क्या आप मेले में हो?

परी - हां।

प्रतीक - रुको मैं आता हूँ।

(फोन पर बात करने के बाद)

विकास - किसका फोन था।

प्रतीक - परी का।

विकास - क्या हुआ?

प्रतीक - परी मंदिर आई है जा रहा हूँ मिलने।

आदित्य - हम भी चलते हैं पता नहीं वो कमीने दुबारा आ गए तो।

विकास - हां चल चलते हैं।

(प्रतीक विकास प्रीतम और आदित्य मंदिर जाते हैं वह मंदिर जाते ही रहते हैं कि उन्हें दिखता है कि परी और उसकी मम्मी और उसकी दीदी जा रही होती हैं। परी के पीछे ही वो चारों लड़के जा रहे हैं। प्रतीक यह देखते ही बहुत ज्यादा गुस्से में आ जाता है।

प्रतीक आदित्य से विकेट लेता है और उन्हें मारने के लिए जाता है। आदित्य प्रतीक को रोकता है और कहता है पहले इन चारों को इधर लाते हैं क्योंकि अगर मंदिर में हम कुछ भी करेंगे तो बहुत बुरा हो जाएगा और प्रॉब्लम हो सकती है। वह चारों (विकास, आदित्य, प्रीतम, प्रतीक) भाग करके जाते हैं जैसे ही वह चारों लड़के इन प्रतीक, आदित्य, विकास और प्रीतम को देखते हैं वह भागने लगते हैं यह चारों भी उनके पीछे-पीछे भागते अंत में वह गली में पहुंच जाते हैं यहां पर वो चार लड़कों के साथ तीन लड़के और खड़े होते हैं और प्रतीक बहुत गुस्से में रहता है।)

प्रतीक - बेटा आज न तुम सबको इतना मारूंगा न कि परी का नाम भी नहीं लोगे कभी।

(बहुत ही ज्यादा लड़ाई होती है प्रतीक विकास सब विकेट और बैट साथ में रखे हुए रहते हैं इसलिए वह उन लोगों को भगा-भगा करके खूब मारते हैं और अंत में वह उन दोनों लड़कों को पकड़ लेते हैं जो उस समय उन्हें डराने की कोशिश कर रहे होते हैं)

पहला लड़का - माफ कर दो भाई प्रतीक माफी चाहते हैं।

प्रतीक - आज के बाद मुझे इस गली में तुम दिखने भी नहीं चाहिए।

दूसरा लड़का - सॉरी भैया छोड़ दो हमें।

विकास - वैसे तुम्हें भेजा है किसने ?

पहला लड़का - हम परी के घर के बगल की गली में ही रहते हैं जब उस दिन आप परी को छोड़ने जा रहे थे तब मैंने देखा और मैंने अपने दोस्तों को बताया ताकि हम ब्लैकमेल करके आपसे पैसे ले सके या फेसबुक पर आपको परेशान कर सकें।

प्रतीक - आगे से ऐसा कुछ किया तो बहुत मारूंगा तुम्हें अब निकलो यहां से।

(प्रतीक घर की तरफ निकल जाता है और परी को मैसेज कर देता है कि मैं 20 मिनट बाद आपसे आकर के मिलता हूं। विकास परी को फेसबुक पर ही मैसेज करता है कि आज किस तरह से चार लड़के आकर के प्रतीक को आपके बारे में परेशान कर रहे होते हैं परी को इस बात का पता चलता है तो वह प्रतीक से पूछने की कोशिश करती है लेकिन परी को प्रतीक कुछ भी नहीं बताता। परी प्रतीक को कहती है कि मम्मी और दीदी घर के लिए निकल चुकी हैं परी और नेहा वहीं मंदिर में हैं तो वह जल्दी आए और उनसे मिले)

परी - कुछ बताओगे आप ।

प्रतीक - कुछ नहीं हुआ बस वह लड़के आपके बारे में मुझे बोल रहे थे जो मुझे अच्छा नहीं लगा इसलिए मैंने उन्हें बहुत मारा। यार मैं नहीं चाहता कोई आपके बारे में मुझे बोले मुझे नहीं पसंद है कि कोई आपको लेकर के या विकास को ले करके मुझे टारगेट करे।

परी - यार मैं अपनी मम्मी और दीदी के साथ जा रही थी अच्छा हुआ उन्होंने आपको नहीं देखा, नहीं तो परेशानी बढ़ सकती थी।

प्रतीक - यह क्या आपने लगा रखा है परी मैं आपके लिए लड़ भी जाऊं और आप यह चाहते हैं कि मैं आपके फैमिली से बचा भी रहूं ऐसा नहीं हो सकता या मैं आपके बारे में नहीं सुन सकता वैसे रात काफी हो गई है आपको घर के लिए निकलना चाहिए मैं कल आपसे बात करूंगा।

(यह कहने के बाद प्रतीक निकल जाता है। परी की आंखों में आंसू भर जाते हैं। परी नेहा के साथ अपने घर के लिए निकल जाती है। प्रतीक 1 घंटे बाद परी को मैसेज करता है कि सॉरी मैंने आपको बहुत ज्यादा ही गलत बोल दिया। मैं कल आपसे पार्क में मिलूंगा प्लीज कल दशहरा है तो आप भी पार्क में जरूर आना। पार्क में हम मिलकर के बात करते हैं।)

प्रतीक - परी मुझे आपसे एक बात कहनी थी।

परी - कहिए।

प्रतीक - (प्रतीक अपनी आंखें बंद कर लेता है) परी । Love You...

परी - I Love You To Pratik

प्रतीक - आपको भी मुझसे प्यार है।

परी - हां।

प्रतीक - तो पहले क्यों नहीं बोला?

परी - बस एक डर था मन में।

प्रतीक - मुझे भी।

परी - प्रतीक मैं हमेशा मन बना करके आती थी कि आज मैं आप से बोल दूंगी आज मैं आपसे बोल दूंगे लेकिन मैं कभी बोल नहीं पाती थी तो मैंने सोचा कि जब हम लास्ट ईयर मनाएंगे परीक्षा खत्म होने वाली होगी तब मैं आपसे अपने प्यार का इजहार कर दूंगी लेकिन मैं अभी आपसे बोल नहीं सकती थी लेकिन उस समय अगर मैं आपसे बोलती भी तो आप कहां रहते और मैं कहां रहती इसका मुझे पता नहीं था लेकिन हां एक बात मैं आपसे कहना चाहती हूं कि मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं आप हमेशा मेरे दिल में रहोगे मैं आपके बिना नहीं रह सकती।

प्रतीक - यार असलियत में मैं भी आपसे बहुत प्यार करता हूं मैं भी आपके बिना एक पल नहीं रह सकता और हां मैं आपसे वादा करता हूं कि मैं आपको कभी धोखा नहीं दूंगा क्योंकि मैं आपसे बहुत प्यार करता हूं भले आप मुझ पर भरोसा करो या ना करो लेकिन मैं आप पर सच्चे दिल पर भरोसा करता हूं।

(परी प्रतीक से गले मिल जाती है प्रतीक से कहती है कि मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं जब दोनों गले लग करके आते हैं तो प्रतीक देखता है कि परी रोने वाली रहती है प्रतीक यह देखकर के चौंक जाता है)

प्रतीक - क्या हुआ ?

परी - यार मुझे कभी नहीं लगा था कि आप मुझसे प्यार करोगे, क्योंकि मैं देखती थी कि क्लास में हर लड़की आपकी फैन है क्योंकि आप अच्छे दिखते हो, पढ़ते हो इसलिए और मैंने कभी उम्मीद नहीं कि थी कि आप मुझसे प्यार करोगे।

प्रतीक - यार इसमें रोने का क्या बात है मैं आपसे प्यार करता हूँ।
और करता रहूँगा ।

परी - पक्का ।

प्रतीक - हां ।

(दोनों काफी देर तक बात करते हैं उसके बाद प्रतीक देखता है कि
11:00 बजने वाले होते हैं चूंकि वह दशहरा का दिन रहता है तो
प्रतीक कहता है)

प्रतीक - आपको घर नहीं जाना।

परी - क्यों मेरे साथ बैठने का मन नहीं कर रहा।

प्रतीक - कर रहा है लेकिन काफी देर हो गयी है आपके घर वाले
आपको खोजते होंगे।

परी - ठीक है मैं चलती हूँ फिर आपसे मिलूंगी।

(परी जैसे ही घर पहुंचती है हाथ मुँह धोती है। परी अपना फोन
टेबल पर रख देती है। जब वो ड्रेस बदल कर आती है तो देखती है
कि दीदी उसके मोबाइल के सारा फेसबुक का मैसेज पढ़ रही होती
है। दीदी देखती है की प्रतीक से इतनी-इतनी रात तक परी बातें
करते रहती हैं। दीदी को यह डर होता है कि कहीं परी प्रतीक के
प्यार में ना फंस जाए।)

दीदी - ये क्या है परी?

परी - मैसेज मेरे और प्रतीक का।

दीदी - तुझे जरा सी भी शर्म नहीं आई किसी और लड़के से बात करते हुए वह भी इतनी रात तक।

परी - दीदी वो मेरा दोस्त है।

दीदी - दोस्त है तो इतनी रात तक बात होती है। अगर आशिक हो जाए तब तो तुम पूरी रात बात करोगे।

परी - ऐसा कुछ नहीं है।

दीदी - पता नहीं तुम किसके चक्कर में पड़ गई हो परी लेकिन बहुत गलत हो रहा है। यह मैं बात जाकर अभी मम्मी और भैया को बताती हूँ।

परी - नहीं दीदी सॉरी।

दीदी - तुमने देखा है कभी उसे कैसा है वह कैसे उसके घर के परिवार हमारे तरह हैं वो इतने अमीर लोग, फालतू लफंगे के साथ तुम प्यार करने जा रहे बेकार लड़का है वह, सब पढ़ने से कुछ नहीं होता परी तुम मान जाओ परी वह तुम्हारे लायक नहीं है वह हमारे बराबर का नहीं है। अभी ही मैं भैया को बोलती हूँ तुम्हारा कॉलेज जाना बंद करवाती हूँ और उसके बाद जीजा जी को फोन करके बताती हूँ तब तुम्हारी प्रेम कहानी खत्म बहुत यह लड़का आशिक बाज हो रहा है ना अभी बताती तुम्हारे जीजा जी को इसका दिमाग ठिकाने लगाएंगे।

परी - बस दीदी बहुत हो गया कुछ भी कमी है उसमें लेकिन मैं उसके बारे में नहीं सुन सकती आप उसे मरवा दो कटवा दो मुझे भी

मार दो, उससे कोई मतलब नहीं लेकिन मैं उसे अपनी आखिरी सांस से प्यार करती रहूंगी क्योंकि वो मुझसे प्यार करता है मैं भी उससे प्यार करती हूँ।

दीदी - ठीक है कर प्यार , लेकिन हां अब तू कभी मुझसे बात मत करना। तू एक अनजान लड़के के लिए अपनी दीदी से लड़ रही है जा तुझसे मुझे कोई बात नहीं करना।

परी - ठीक है।

(शाम को परी फेसबुक पर ऑनलाइन होती है तब प्रतीक को सारी बातें बताती है कि किस तरह से दीदी उसको धमकियां दे रही होती हैं उसे यह भी बताती दोनों के बीच में खूब झगड़ा होता है उसके बाद प्रतीक परी से पूछता है ?)

प्रतीक - यार मेरे लिए फैमिली से झगड़ा क्यों?

परी - क्योंकि मैं आपसे प्यार करती हूँ।

प्रतीक - यार लेकिन आपकी दीदी ही हमारे प्यार से सहमत नहीं है।

परी - मैं सबको मना लूंगी लेकिन अभी मुझे आपसे प्यार करना है तो मैं करूंगी।

प्रतीक - आज दशहरा है तो हैप्पी दशहरा।

परी - हैप्पी विजयादशमी।

प्रतीक - रात में मैं ऑनलाइन नहीं हो पाऊंगा।

परी - ठीक है।

प्रतीक - अच्छा कल आप आओगे न कॉलेज।

परी - नहीं, कुछ काम है।

प्रतीक - ठीक है।

(दशहरा और महा दशमी के कारण माता की मूर्ति का विसर्जन हो जाता है प्रतीक अगले दिन कॉलेज जाता है।)

प्रतीक (गुनगुनाते हुए) -

तू छोड़ गई अगर तो क्या होगा जीना,

जिंदगी कुछ नहीं अब तो तेरे बिना ओ तेरे बिना.....

आदित्य - किसके बिना परी के बिना।

प्रतीक - नहीं यार।

आदित्य - तो फिर, कौन, वैसे एक बात है तू कितना भी झूठ बोल लेकिन हमसे झूठ नहीं बोल सकता बाबू।

प्रतीक - यार आज वो कॉलेज नहीं आयेगी आज उसके बिना मेरा भी मन नहीं लगेगा। क्या कहूं भाई मैं परी से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूप से प्यार करता हूं शायद मैं उससे इतना ज्यादा प्यार कर बैठा हूं कि उतना वो मुझसे ना कर सके।

आदित्य - कल तक एक ऐसा लड़का जो लड़की से बात करने में शर्माता था आज वो भी किसी का दीवाना है और क्या नशा चढ़ा है उसे प्यार का कि वो उसके प्यार का याराना है।

प्रतीक - यार प्यार हो गया तो अब क्या कर सकते हैं और प्यार तो सबको होता है ना और वैसे ही मुझे भी परी से प्यार हो गया इसमें खराबी क्या यार प्यार तो प्यार होता है।

आदित्य - लेकिन हमारे नये आशिक महोदय पर पढ़ाई भी जरूरी है ना प्यार तो प्यार होता है लेकिन पढ़ाई को आप नजरअंदाज मत करना किसी के प्यार के लिए।

प्रतीक - हां यार वह तो है ही क्योंकि पहले पढ़ाई प्यार बाद में।

आदित्य - हां भाई।

(हमेशा की तरह क्लास शुरू होती है और सारे शिक्षक पढ़ाते हैं क्योंकि यह नवरात्र के बाद का पहला दिन था तो बच्चों की अनुपस्थिति ज्यादा थी, इसलिए आज जल्दी छुट्टी होगी। कॉलेज की जल्दी छुट्टी हो जाने के बाद प्रतीक अपने घर की तरफ जा रहा था साथ में आदित्य विकास भी थे वो तीनों अपनी मस्ती में बातचीत करते हुए जा रहे थे। अचानक रास्ते में प्रतीक ने देखा कि परी अपने दोस्त के साथ आ रही थी। परी को देखकर के प्रतीक फूले नहीं समा रहा था मन में बहुत कुछ लिए प्रसन्नता से चलो कॉलेज ना सही लेकिन परी रास्ते में तो मिली।)

विकास - अरे परी आप, कहां जा रहे हैं?

परी - विकास थोड़ा बाज़ार में कुछ काम था इसलिए बाज़ार जा रही थी, अच्छा वो सब छोड़ो आज क्लास में क्या पढ़ाई हुई?

विकास - कुछ नहीं बस इतिहास और भूगोल के प्रश्नोत्तर का क्विज हुआ बस और जल्दी छुट्टी हो गई।

परी - ठीक है विकास मैं चलती हूं।

विकास - परी, प्रतीक को कोई Hii, Hello नहीं, बात तो कर लीजिए आज मन नहीं लगा बेचारे का आपके बिना।

(परी बिना कुछ कहे ही चल जाती है)

प्रतीक - गुस्सा है वो यार अभी।

विकास - क्यों क्या हुआ?

आदित्य - कुछ उल्टा सीधा बोल दिया क्या?

प्रतीक - नहीं यार , वो कल हम दोनों फेसबुक पर बात कर रहे थे तो परी ने मुझे बताया कि हम दोनों का मैसेज उसकी दीदी ने पढ़ लिया है और उसकी दीदी बोल रही थी कि वह मुझे परी के जीजा जी से कहकर मरवा देगी। इस बात पर परी अपने दीदी से झगड़ा कर बैठी तो मैंने परी को समझाया कि वह मेरे लिए दीदी से झगड़ा ना करें क्योंकि इसमें कोई फायदा नहीं है। तो इस बात पर वो और ज्यादा गुस्सा हो गई और बोलने लगी कि आप मेरा खराब ही सोचते हो और यह कहकर वह चली गई । फिर बोलती है कि मैं शायद इस दुनिया की सबसे बेकार बहन, बेटी और मित्र हूं।

विकास - बस इतनी सी बात, अरे देख छोटा शब्द है सारा मीटर क्लोज हो जाएगा ।

प्रतीक - क्या ?

विकास - प्यार भरे शब्द बोल दे।

प्रतीक - अबे कौन सा प्यार भरा शब्द?

आदित्य - I Love You इतना ही बोल दे सब शांत हो जाएगा।

प्रतीक - हां!

विकास - प्रतीक जब ये आदित्य I Love You बोल रहा था न तो ऐसा लग रहा था कि तू नहीं ये आशिक हो परी का।

प्रतीक - हां आज आदित्य को भी प्यार भरा देख लिया हमने।

(तीनों दोस्त बातचीत करते-करते अपना फेसबुक ऑन करते हैं और वह देखता है कि परी का मैसेज आया हुआ रहता है।)

परी - प्रतीक सॉरी कल हम गुस्से में गलती से आपको बहुत कुछ कह दिए। इसके लिए मैं आपसे माफी मांगती हूं कृपया करके मुझे माफ कर देना। आप मेरे प्यार हो और मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं। मैं कल आपकी बात नहीं समझ पाई लेकिन जब अभी मैंने शांत मन से सोचा तब मुझे लगा कि आप सही थे। ठीक है अगर आप मुझसे प्यार करते होंगे तो आप मुझे माफ कर देना ओके बाय लव यू।

प्रतीक - ठीक है मैं आपको माफ़ कर देता हूँ लेकिन आपसे एक अनुरोध है कि आप अपने गुस्से पर काबू करो नहीं तो यह गुस्सा क्या से क्या करा सकता है इसलिए अपने गुस्से पर काबू करने की कोशिश करो नहीं तो बाद में बहुत मुश्किल होगी क्योंकि हर समय गुस्सा और झगड़ा हर समस्या का समाधान नहीं होता। मन मेरा अभी कर रहा कि मैं आपसे बात नहीं करूँ लेकिन आपके प्यार ने मेरे कठोर दिल को पिघला दिया और हाँ आई लव यू टू।

(पांच मिनट बाद प्रतीक के फोन पर परी का कॉल आता है।)

परी - Hello

प्रतीक - हाँ कहिए।

परी - I Love You प्रतीक So Much and also you are my best Friend

प्रतीक - I Love you To Jaan

परी - अब से मैं कभी भी ऐसी गलती नहीं करूँगी जिससे कि हम दोनों के बीच में झगड़ा हो।

प्रतीक - ठीक।

परी - पता नहीं क्यों आपके बिना मैं एक भी पल रह नहीं पाती।

प्रतीक - सही में कि।

परी - हाँ क्यों आपको विश्वास नहीं है क्या?

प्रतीक - विश्वास तो है लेकिन मैं आपसे अगर आपके प्यार का प्रमाण मांगूँ तो आप क्या करोगे?

परी - मैं आपके लिए सब कुछ छोड़ सकती हूँ और आपके प्रति मेरा सब कुछ समर्पित है।

प्रतीक - वाह यार इतने कम दिन में आप मुझसे इतना प्यार करने लग गए। ठीक है अभी फोन रखिए। फेसबुक पर बात करते हैं क्योंकि मम्मी और पापा ने मुझे किसी और लड़की से बात करते हुए देख लिया तो मैं बहुत बुरी तरह से फंस सकता हूँ।

परी - ठीक है , आइए फेसबुक पर।

प्रतीक - हां। लव यू

परी - लव यू टू।

(फेसबुक पर दोनों बात करते हैं और बात खत्म हो जाती है। उसी दिन शाम में प्रतीक अपने दोस्त आदित्य और प्रीतम के साथ बाइक से घूमते रहता है।)

प्रतीक - अरे प्रीतम आज विकास क्यों नहीं आया?

प्रीतम - आज उसे कुछ काम था इसलिए वो आज नहीं आया। बोला कि कहीं जाना है उसे।

आदित्य - कोई नहीं प्रतीक काम होगा चलो हम घूमते हैं।

(अचानक घूमते-घूमते उनका मन बनता है क्यों ना पार्क में चला जाए जब वो पार्क जाते हैं तो देखते हैं एक लड़की एक लड़का के हाथ में हाथ डालकर बात कर रही है। प्रतीक को लगा कि यह परी है। लेकिन उसे यह लगा कि शायद यह उसके मन का भ्रम है।

फिर भी प्रतीक ने आदित्य से कहा कि मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि वह लड़की जो उस लड़के के हाथ में हाथ डाल करके बात कर रही है वह परी है?)

आदित्य - कहां यार? वो परी नहीं है।

प्रतीक - नहीं यार मेरा दिल का तो नहीं पता लेकिन मेरा मन कह रहा है कि वो परी है।

प्रीतम - यार लगता है कि तेरे मन में परी की बीमारी बन कर बस गई है। चल अब कहीं और चलें।

(प्रतीक और प्रीतम पीछे मुड़ते हैं कि तभी आदित्य बोलता है।)

आदित्य - प्रीतम प्रतीक सही कह रहा है ये तो परी है।

प्रीतम - हां यार लेकिन ये लड़का कौन है जिसे ये गले लगा रही है?

आदित्य - पता नहीं कौन है?

(प्रतीक बाइक के किनारे लगे विकेट को निकालता है)

प्रतीक - चल अब उससे ही पूछेंगे कि ये कौन है?

(आदित्य प्रीतम प्रतीक को समझाते हैं कि लड़ना सही नहीं है इसलिए प्रीतम कहता है कि आदित्य को पहले भेजते हैं परी का क्या रिएक्शन होता है इसके बाद हम जाएंगे)

आदित्य - Hi परी।

परी - कौन?

आदित्य - मैं प्रतीक का दोस्त आदित्य।

(परी जिस लड़के के साथ घूम रही थी और हाथों में हाथ डालकर बात कर रही थी उस लड़के का नाम रवि था।)

रवि - ये कौन है परी ?

परी - पता नहीं यार रवि ये कौन है?

आदित्य - अरे परी अब मुझे इतना जल्दी भूल गए तब तो आप प्रतीक को भी नहीं जानते होंगे जिससे आप इतना ज्यादा प्यार करते हो और वह भी आपसे प्यार करता है।

रवि - तुम जो भी हो ये तुम्हें नहीं जानती, इसलिए तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम यहां से चले जाओ।

(यह कहते ही रवि और परी जैसे ही पीछे मुड़ते हैं तो प्रतीक अपने हाथ में विकेट लेकर प्रीतम के साथ खड़ा रहता है।)

रवि - अच्छा ये है क्या ?

प्रतीक - हां मैं हूँ तेरा बाप ।

रवि - देख यहां मत लड़ अगर यहाँ भी लड़ेगा तू मेरा कुछ नहीं कर सकता लेकिन भीड़ वाली जगह है इसलिए यार्ड चल।

(सब यार्ड जाते है, वो पार्क के बगल में ही था।)

रवि - तुम तीन हो और हम 8 अब सोचो क्या करना है। प्रतीक तेरा वो बेस्ट फ्रेंड कहां है विकास ?

(तीनों कंप्यूज हो जाते हैं कि रवि को कैसे पता कि विकास प्रतीक का बेस्ट फ्रेंड है।)

रवि - नहीं जानते क्या? देखोगे उसे रुको, मुकेश ला भाई विकास को ।

(प्रीतम, प्रतीक और आदित्य जब विकास को देखते हैं तो वह चौंक जाते हैं। रवि के दोस्तों ने विकास को बहुत ही बुरी तरह से मारा होता है। विकास के हाथ-पैर सबसे खून निकल रहा होता। प्रतीक से यह देखा नहीं गया और प्रतीक ने विकेट लेकर के मुकेश को एक जोरदार दे मारी। यह देखते ही रवि के दोस्त और प्रतीक आदित्य के बीच भारी लड़ाई छिड़ जाती है।)

(विकास ने अपने फोन से किसी को फोन किया। रवि और उसके दोस्त प्रतीक, प्रीतम और आदित्य को पकड़ लेते हैं और बताते हैं कि पूरा मामला क्या है? प्रतीक उन लड़कों से भी मिलता है जो कि उस दिन प्रतीक का पीछा कर रहे होते हैं वह लड़के रवि के ही दोस्त होते हैं।)

रवि - देख प्रतीक तेरे से मेरा कोई दुश्मनी नहीं है लेकिन देख यार मेरे घर वाले चाहते थे कि परी इस बार पढ़ाई में टॉप करे लेकिन तेरी वजह से परी हर बार दूसरे स्थान पर रह जाती थी और तू पहले स्थान पर बाजी मार जाता था क्योंकि यह लास्ट सेमेस्टर था तो हमने

सोचा कि क्यों ना अब ऐसा दांव चला जाए जिससे कि सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे। बस इस वजह से ये झूठा प्यार शुरू हुआ। बस गलती ये हो गई कि तेरी मोहब्बत का पता परी की दीदी को भी चल गया बस यही प्रॉब्लम हो गई नहीं तो तुम आज अगर हमसे नहीं मिलते तो इस सच से कभी वाकिफ नहीं हो पाते।

(कुछ देर बाद एक कार आती है 5 लड़के उसमें से उतरते हैं। प्रतीक देखता है ये तो उसके क्लास के दोस्त रहते हैं जो कि विकास को इस हालत में देख वो गुस्से से पागल हो जाते हैं। वो सब विकेट, हॉकी स्टिक से रवि और उसके दोस्तों को मारने लग जाते हैं। एक जोरदार लड़ाई के बाद रवि के दोस्त भाग जाते हैं अंत में रवि और मुकेश और वो लड़के जो उस दिन प्रतीक का पीछा करते हुए मिले थे वो रह जाते हैं।)

प्रीतम - बेटा तुम अच्छा गेम खेले लेकिन एक गलती कर दी विकास को मार कर। अब इसका परिणाम तो भुगतना पड़ेगा तो इसकी सजा तुम्हें ये मिलेगी कि तुम्हें हम तब तक मारेंगे जब तक विकास बस नहीं बोलेगा।

प्रतीक परी के पास जाता है।

प्रतीक (रोते हुए) - परी क्या कमी थी मेरे प्यार में?

परी - पता नहीं।

प्रतीक - एक बार कहती तो सही कि तुम्हें टॉप करना है मैं पढ़ाई छोड़ देता।

परी - सही में क्या?

प्रतीक - मन तो कर रहा है कि मैं क्या कर दूँ लेकिन तू बेवफा है यार तेरे साथ कुछ करने का भी क्या फायदा तुझमें हृदय थोड़ी न है।

परी - प्रतीक मुझे सच में तुमसे प्यार हो गया है। अब सच में मैं तुम्हारी बनना चाहती हूँ। मैं रवि के बहकावे में आ गई थी।

प्रतीक - प्रीतम रवि को छोड़ दे।

प्रीतम - ठीक है।

प्रतीक - अच्छा मुझसे ही प्यार करती हो न इससे नहीं न मेरा मतलब रवि से नहीं न।

परी - बिल्कुल नहीं।

प्रतीक - देख रवि जिसके लिए तूने ये अपने दोस्तों को लेकर आया था कोई फायदा नहीं है बेवफा है ये कल को इसे तुझसे अच्छा मिल जाए तो तुझे भी मेरी तरह बर्बाद कर देगी।

रवि - हां भाई।

प्रतीक - चल अब अपने सारे दोस्त को बुला हम अपना मामला बंद करें ये तो बेवफा है इसका कुछ नहीं कर सकते।

(परी प्रतीक के पैर में गिर जाती है प्लीज प्रतीक मान जाइए मैं आपसे ही प्यार करती हूं।)

प्रतीक - यार एक बात बोलनी थी आपसे

ये जो प्यार है ना बड़ी बेकार चीज है अच्छे से हो जाए तो जान ले लेती है और बेवफा से हो जाए तो अरमान ले लेती है।

जैसे आपने मेरा अरमान ले लिया।

(रवि और उसके दोस्त अब प्रतीक और उसके दोस्तों से आपस में मिलकर के कम्प्रोमाइज कर लेते हैं। रवि और उसके दोस्त कम्प्रोमाइज होने के बाद चले जाते हैं। विकास के और प्रतीक के दोस्त भी चले जाते हैं। बस वहां पर प्रतीक, प्रीतम, आदित्य और विकास रह जाते हैं। परी रो रही होती है। प्रतीक जैसे ही निकलने वाला होता है परी भाग कर आती है।)

परी - प्लीज मुझे माफ़ कर दो नहीं तो मैं मर जाऊंगी।

प्रतीक - हाथ हटा और हां जा मर जा तू क्योंकि जीकर तू किसी लड़के का दिल ही तोड़ेगी इसलिए तेरा मरना ही अच्छा है।

(प्रतीक अब अपने पढ़ाई पर ध्यान देने लग जाता है ऐसा लगता है मानो वह परी को भूल चुका हो लेकिन क्या करे वह कभी-कभी अपने दोस्तों को बताते-बताते रो भी पड़ता है क्योंकि यह एक ऐसा अतीत था उसका जो कि कभी उसका साथ नहीं छोड़ सकता था। कॉलेज में परी प्रतीक से बात करने की बहुत कोशिश करती थी लेकिन प्रतीक कोई रिप्लाय नहीं देता था। उस साल आखिरी सेमेस्टर में प्रतीक ने पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। परी चौथे स्थान पर थी। आदित्य दूसरे स्थान पर था। उसके बाद वह जब प्रतीक अपने दोस्तों और कॉलेज के अंतिम विदाई की पार्टी में जाता है तो वहां जाकर कहता है कि

प्रतीक - यार कोशिशें तो बहुत की हैं लोगों ने मुझे इस जगह से हटाने की लेकिन शायद वो नहीं जानते कि मेहनत कभी विफल नहीं होती। जो कभी मेरे बाद थे आज वो मेरे बाद भी नहीं रह गए। बस एक प्रेम भरी कविता सुनाना चाहूंगा आपको।

तू नज़रों से दूर

कभी न जा सकी

प्यार किया बेहद तुझसे

लेकिन तू वो प्यार कभी

समझ न पा सकी

इंतज़ार है आज भी मुझे

उस वक्त का

की जब तुझे एहसास होगा...

की प्यार क्या है मेरा,

प्यार क्या है मेरा?

तालियों से सब प्रतीक के नाम की आवाज़ लगा रहे थे। कार्यक्रम खत्म हुआ। प्रतीक जा रहा था। वो बाइक स्टार्ट कर ही रहा था कि पीछे से आवाज़ आयी कि आज तो एक बार बात कर लो। प्रतीक पीछे घूमता है तो परी थी।

प्रतीक - कोई बात नहीं करना अब तो (बाइक स्टार्ट करता है और परी के पास आता है)

परी - आज बात कर लो।

प्रतीक - मैडम जी वो अधिकार आप खो चुकी हैं। आप कभी जान थी मेरी लेकिन उस दिन के बाद से आप एक प्रतिद्वंदी हो सिर्फ और हाँ माफ करना। आपका नाम भी नहीं ले सकता अब क्योंकि बेवफा हो मेरे लिए आप, बाय!!

प्रतीक बाइक स्टार्ट करता है और घर के लिए निकल जाता है । बेशक से वो कुछ भी कहता हो लेकिन उसके दिल में आज भी परी के लिए प्यार है ।

कुछ इस तरह इस प्रेम कहानी का अंत हो जाता है ।

2

प्रतीक्षा और प्यार

उस दिन मैं पता नहीं क्यों चुपचाप था हालांकि मैं बहुत ही ज्यादा बदमाश और मजाकिया स्वभाव का हूँ लेकिन उस दिन मैं शांत था। दोस्तों ने पूछा भी लेकिन क्या कहूँ कि क्या हुआ है। बार - बार उसी बात का जिक्र मेरे माइंड में हो रहा था। वो जिस कदर से मुझे आकर मुझे उसने सुनाया था डांटा था मैं चुप सा हो गया था होता भी कैसे नहीं वो मुझसे सीनियर थी और सुबह मैंने तबके से तैयार होकर एक छोटा गुलदस्ता खरीद कर डायरेक्ट मैंने उसे इजहार किया था कि मैं उससे प्यार करता हूँ। उसके बाद क्या होने को बचा था? वो लगी सुनाने मुझे की you don't know blah ! blah ! blah ! blah!

मेरे पास उस समय बोलने को कुछ नहीं था क्योंकि गलती अपनी थी मैंने चादर से ज्यादा पैर पसार लिए थे जिसमें की गलती मेरी ही थी। अब तक आप इतनी बातों को पढ़ कर समझ ही गए होंगे कि बात क्या होगी लेकिन अब मैं आपको बताऊंगा दरअसल बात क्या थी और कौन थी जिसको मैंने अपने प्यार का इजहार किया था।

मैं बैंगलोर से बेसिक ट्रेनिंग कंप्लीट कर चुका था और मैं अब मैसूर जा रहा था ट्रेनिंग में। हेब्बल में मुझे पल्मायरा गेस्ट हाउस में रहने

के लिए दिया गया। मैं अगले ही दिन तैयार हो गया और निकल पड़ा कंपनी के नई ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट के लिए। पहले दिन की ट्रेनिंग मैंने निकाली लेकिन ट्रेनिंग से ज्यादा मैं उस लड़की को याद कर रहा था जिसे मैंने टी ब्रेक में देखा था। वो लाल रंग की कुर्ती और काले सलवार में कतई जहर लग रही थी। इंस्टीट्यूट की पढ़ाई से ज्यादा वो मेरे मन में घूम रही थी। मैं वॉटर इफ्लुएंट ट्रीटमेंट में था और वो टेक्नोलॉजी और सर्विसिंग डिपार्टमेंट में थी।

अगली सुबह उठ करके तैयार होकर खुद को मैं सुपरस्टार की तरह बन कर निकल गया। पूरे लंच, टी ब्रेक, कॉफी ब्रेक में सिर्फ उसे ही देखता रहा यूहीं दिन कट रहा था। मैं बस क्लास जाता पढ़ता और उसे देखता। कुछ दिन के बाद मुझे पता चला कि इंस्टीट्यूट में मासिक कला महोत्सव होने वाला है तो मन किया कि भाग लिया जाए फिर क्या था लग गया तैयारी में। मैं और मेरे तीन दोस्त ने बड़ी मशक्कत के साथ एक गाने को चुना। लेकिन मन में लगा कि ये तो दिल्ली, चंडीगढ़ है नहीं लोगों को कैसे समझ आएगा? फिर मन बनाया गाना गाएंगे जो होगा देखा जायेगा।

एक दिन यूहीं मैं बैठ के अपने मित्र धर्मेन्द्र से बात कर रहा था कि भुवनेश्वर से बीटेक करते हैं डिप्लोमा के बाद बेहतर रहेगा हमारे लिए। तभी एक लड़की ने पूछा कि आप भुवनेश्वर से हो? मैं अचंभित था वो कोई और नहीं वहीं लड़की थी जिसको देखने के लिए मैं व्याकुल रहता था। मैं बोला नहीं मैं दिल्ली का हूं लेकिन मेरी फैमिली जमशेदपुर में रहती है। वो बोली जमशेदपुर में मेरे भैया काम करते हैं और मैं यहां काम करने के बाद जमशेदपुर में ही जॉब करूंगी क्योंकि मुझे वो जगह पसंद आ गयी।

उस दिन के बाद मुझे लगा कि शायद ये मन ही मन मुझे चाहती होगी लेकिन बात ये है कि मैं भी सोचता था। क्या एक आईटीआई वाले को बीटेक वाली से प्यार और बीटेक को आईटीआई से? मेरे

कुछ दोस्त मुझे कहा करते थे कि तूने न सपने से भी बड़े सपने देख लिए लेकिन मेरा दिल पता नहीं कैसे उसके प्यार में पागल हो गया। एक दिन वो जब टी ब्रेक पर आ रही थी तब मैंने उसे अकेले देखा मैंने सोचा ये सही मौका है बात करने का। फिर क्या था मैं गया भाग के उसके पास .. मैं - हैलो वो - हाय मैं - कैसे हो आप? वो - ठीक हूं आप बताइए कैसे हैं ? मैं - भगवान की दुआ है । एक बात पूछ सकता हूं मैं। वो - पूछिए एक क्या 2 पूछिए मैं - आपका नाम क्या है? (बोली में थोड़ा डर था जो वो समझ चुकी थी) वो - क्या कीजिएगा जान कर ? मैं - कुछ नहीं सोचा की कोई तो फ्रेंड बने बीटेक की। वो - अच्छा! (हम चाय वाले फ्लोर पर पहुंच चुके थे मैंने सोचा कि यार मुझे रास्ता बदल लेना चाहिए क्योंकि उसकी क्लास के लड़कों को मैं कुछ खास पसंद नहीं करता था।)

अचानक पीछे से आवाज़ आई नाम जाने बगैर मत जाओ, मेरा नाम प्रतीक्षा मिश्रा है - वो बोली बस उसके इतना बोलते ही दिल में जगे 100 अरमान एक लाख अरमान में तब्दील हो गए। फिर वो बोली - अच्छा शाम में मिलते हैं। धर्मेन्द्र जो कि मेरा परम मित्र है वो सारी बातें सुन रहा था वो बोला हां भाई हो गई बातचीत। नहीं यार बस ऐसे ही नाम जानने का मन था जान गया - मैंने भी तपाक से बोला। वो बोला कि भाई तू कितने साल का है? मैं - 18 का हूं वो - भाई 21 का हूं सारा ज्ञान ले रखा है कि कहां जानने का मन और कहां प्यार का मन होता है। वैसे एक बात अच्छी है कि तू भी मिश्रा वो भी मिश्रा जोड़ी तो बहुत जमेगी। भाई एक परेशानी है। मैं - क्या परेशानी है बता?

वो - प्रतीक्षा जी बीटेक और तुम आईटीआई जोड़ी... मैं बात काटते हुए बोला - भाई पंडित को बुलाता हूं यहीं रिश्ते की बात कर ले यार दोस्ती बस और कुछ नहीं है मेरे भाई। पता नहीं किस कदर वो मेरे दिल में घर और अपना एक जगह कब्ज़ा कर लिया?

ऐसे ही बात चलती रही और बात - बात में ही कितने फंक्शन निकल गए ? अब वो दिन आ गया था जब मैं जाने वाला था हालांकि अब तक इतने लंबे अरसे तक हम दोनों बस दोस्त बन कर रहे उससे ज्यादा कुछ नहीं। मैंने उस दिन ये ठान लिया था आज प्रतीक्षा को अपने प्यार का इजहार करके रहूंगा।

शाम का वक्त था हम दोनों क्लास से निकले थे मैंने उसे मैसेज किया कि 7 बजे डोमिनोज़ में मिलते हैं । मैं जब भी उससे मिलता था तो हमारी मुलाकात डोमिनोज़ में होती थी। पिज़्ज़ा और बर्गर बस इतना ही हमारा नाश्ता था। उस दिन मैं कमरे में जाके फ्रेश होकर तैयार होकर निकलने वाला था। परफ्यूम लगाया।

जाने से पहले धर्मेन्द्र ने पूछा - भैयाजी आज क्या इजहार करोगे या पिज़्ज़ा तक ही। मैं - इरादा तो पूरा है कि आज इज़हार कर दूँ बाकी भगवान भरोसे स्वीकार करे कि नहीं। धर्मेन्द्र - अगर मान जाए तो मिठाई भी लेते आना कुछ तो स्वाद आए। मैं - जरूर लेकिन पहले माने तो वो।

मैं वहां पहुंच गया प्रतीक्षा मुझसे पहले से ही बैठी थी। आज तो और कातिलाना अंदाज में बन कर वो आई थी। प्रतीक्षा- कहां थे आप

इतने देर से आए हो। मैं - कुछ काम था बस (एक बनावटी झूठ बोला) प्रतीक्षा - कुछ बात करना था क्या ? मैं - हां मुझे आपसे कुछ कहना है प्रतीक्षा - कहिए मैं - यार बस मुझे इस बात का डर है कि उसके बाद आप मुझसे दोस्ती न तोड़ लो । प्रतीक्षा ने मेरा हाथ पकड़ा और बोली कि अगर आप ये सोचते हो कि मैं आपसे दोस्ती तोड़ लूंगी तो ऐसी कोई बात नहीं है। मैं - हम्म प्रतीक्षा - अच्छा पहले कुछ मंगाते हैं फिर आपके में जान आए फिर बोलना। (हंसते हुए प्रतीक्षा बोली)

प्रतीक्षा ने पिज्जा और बर्गर का ऑर्डर दे दिया। पिज्जा और बर्गर को देख कर ऐसा लग रहा था कि आज वो भी बोल रहा हो कि आज इजहार कर दे। प्रतीक्षा पिज्जा खाने लगी। मैं - प्रतीक्षा, आई लव यू प्रतीक्षा पिज्जा नीचे रखते हुए बोली देखिए आपको मैं एक दोस्त के नजरिए से देखती हूं मेरे दिल में आपके लिए कोई भी प्यार वाली फीलिंग नहीं है। सॉरी यार लेकिन मेरा कोई और बॉयफ्रेंड है।

मैं क्या बोलूं कुछ नहीं? बस अवाक सा देखता रहा। अंदर से दिल रो रहा था फिर भी मैंने बोला कि यार भगवान से प्रार्थना है कि आप खुश रहें उसके साथ। पिज्जा और बर्गर भी खाने का अब ध्यान कहां बस फिर क्या था ? मैं उठा और वो भी उठी लेकिन वो मेरे हाथ को अपने हाथ में पकड़ कर बोली, आप मुझे इतना क्यों पसंद करने लगे? मैं - दिल है बस प्यार कर बैठे पैसे चुकाते हुए मैं बाहर निकला। प्रतीक्षा - पार्क चलें। मैं - तबीयत सही नहीं लग रही है मुझे जाने दो अभी।

(वो भाव को भांप चुकी थी।) वो बोली - आदर्श मुझे पता है कि आपको बहुत ज्यादा ही शॉक लगा है इस बात से। मैं - हां वो बोलती रही और मैं हां नहीं बोलता रहा। पार्क पहुंच गए थे। वहां एक कुर्सी पर हम बैठे। वो - इतना भी प्यार मत करो कि रह न सको। मैं खुद को कंट्रोल नहीं कर पाया और पता नहीं कैसे स्वतः मेरे हाथ मैंने उसके कंधे पर रख के जोर से गले लग गया। मैं - यार मुझे आप नहीं न छोड़िएगा। वो - अरे नहीं यार आपको हम क्यों छोड़ेंगे इस उम्र में सबको प्यार हो जाता है मैं आपकी उम्र से गुजर चुकी हूं। (जानकारी के लिए बता दूं कि प्रतीक्षा मुझसे 5 साल बड़ी थी। वो 23 की मैं 18 का)

मैंने उसके कंधे से हाथ निकाला उसने अपने बैग से एक लव रिंग निकाली और मुझे पहनाई और बोली उससे पहले मैंने आपसे इंगेजमेंट कर ली। अब आप मेरे फ्रेंड नहीं एक जान हो।

उसके बाद मैं और वो गले मिले। प्रतीक्षा ने मुझे बहुत तेज़ी से ऐसे गले लगाया जैसे कि अंत समय में प्यार उमड़ आया हो। उसके बाद जो उसने बोला मैं भी अवाक रह गया। आदर्श आई रिप्ली लव यू लेकिन यार वो मुझे बहुत परेशान करता है।

मैं - कौन ? प्रतीक्षा - यार मैं जब बीटेक में थी तबसे वो मुझे परेशान करता है हर समय मुझे तंग करता है। धमकियां देता है। मैं - नाम क्या है उसका और रहता कहां है? प्रतीक्षा - आदर्श मैं जा रही हूं। मैं - क्यों क्या हुआ अब? प्रतीक्षा - आदर्श मुझे जाने दीजिए। वो भागते हुए पार्क से निकल गई। मैं खुद की आंखों की नमी को रोक नहीं पाया और आंख से बूंदें गिरने लगीं।

उस दिन मैं बहुत ज्यादा ही अपसेट था। मैंने धर्मेन्द्र को फोन किया और ठेके पर बुलाया। (मैं प्रतीक्षा की याद में पिए जा रहा था आंखों से आंधी वाले अश्रु बह रहे थे। तभी धर्मेन्द्र और मेरा एक दोस्त सुधाकर आता है।) धर्मेन्द्र - आदर्श भाई मैं - भाई वो छोड़ के चली गई वो बेवफा बन गई। धर्मेन्द्र - यार तू इतना क्यों पी लिया भाई? मैं - उसे पाने के लिए... सुधाकर - यार अब तो रुक जा। धर्मेन्द्र - आदर्श भाई बहुत लड़कियां मिलेंगी यार तू मत रो मेरे भाई। सुधाकर - (धर्मेन्द्र से) भाई इसे ठीक से ले जाते हैं रास्ते में खट्टी चीज पिला कर नशा उतार देंगे । रात का समय है चुपचाप इसे ले चलते हैं। कल रात की ट्रेन है ठीक हो जाएगा तब तक।

अगली सुबह मैं 1 बजे सोकर उठा। मैं - धर्मेन्द्र भाई यहां कैसे मैं आया । धर्मेन्द्र - मुझे नहीं पता। (गुस्से में) मैं - क्या हुआ भाई इतना गुस्सा क्यों है ? धर्मेन्द्र - बस भाई मन था । मैं - बता दे यारा क्या हो गया ? धर्मेन्द्र - (गुस्से में) यार एक तो 11 बजे तुझे हम लाए तेरी हालत खराब थी। अब भी देख तेरे कपड़ों से शराब की बदबू आ रही है। माना प्रतीक्षा नहीं मिली इसका ये मतलब थोड़ी न है तू पागल हो जाएगा मैं - अच्छा उसका कॉल आया था (बात काटते हुए मैंने कहा) धर्मेन्द्र - आया था सुनाया है उसे भी मैं - (बहुत गुस्से में) तू कौन होता है सुनाने वाला तू दोस्त है उससे ज्यादा कुछ नहीं ? कौन होता है तू प्रतीक्षा को कुछ बोलने वाला? दिमाग नहीं है तुझमें क्या? वगैरह-वगैरह मैंने बोल दिया।

मैं जल्दी से नहा धोकर तैयार हो गया। लैपटॉप चालू करके कुछ देख रहा होता हूं। तभी सुधाकर आता है। सुधाकर - और भाई दिलजले।

मैं - हम्म सुधाकर - और पिएगा उसकी याद में । मैं - नहीं यार। हमारी बात चलती रहती है तभी एक मैसेज आता है कि आदर्श आई एम सॉरी। मैंने मैसेज को अनदेखा किया जब मैंने सुधाकर से ये जाना कि कैसे धर्मेन्द्र ने सब कुछ हैंडल किया। गार्ड को समझाया बहुत कुछ। सुधाकर ने मुझे प्रतीक्षा वाली भी सारी बात बताई और बताया कि भाई धर्मेन्द्र ने प्रतीक्षा को भी समझाया की। प्यार करना है तो कीजिए लेकिन खेल खेलकर उसकी लाइफ को बेकार मत कीजिए । सब कुछ जानने के बाद उसके लिए और दिल में प्यार आ गया कि इस स्वार्थ भरी दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जो अपने से ज्यादा दोस्त पर मरते हैं। मैंने फैसला किया कि मैं उसे सॉरी बोलूंगा। मैं - (सुधाकर से) अच्छा धर्मेन्द्र है कहां? सुधाकर - खाना खाने गया है । मैं - चले हम भी फिर। सुधाकर - चल।

हम खाने के लिए निकल गए लेकिन धर्मेन्द्र के लिए वो दोस्ती और मजबूत हो गई जो पहले थी। यार सच्चाई कहूं तो दिल जीत लिया उसने जो मेरे लिए किया उस बात से।

मैं और सुधाकर खाने की मेज पर गए। मैं और सुधाकर जैसे ही धर्मेन्द्र के साथ वाली कुर्सी पर बैठे धर्मेन्द्र चला गया। मन में मुझे लगा यार कहीं बंदा ज्यादा गुस्सा तो नहीं हो गया? गलती मेरी थी क्योंकि मैं उसे समझ नहीं पाया था। मैं (सुधाकर से)- ज्यादा गुस्सा है लगता है। सुधाकर - कमरे में जाने पर बात करियो उससे और सॉरी बोल दियो । मैं - हां यही करूंगा।

खाना खाने के बाद मैं कमरे में गया धर्मेन्द्र फोन में कुछ देख रहा था।

मैं - सॉरी भाई। धर्मेन्द्र - किस बात के लिए। मैं - यार सुबह में बहुत ज्यादा सुना दिया तुझे। धर्मेन्द्र - अच्छा उसके लिए। मैं - हां धर्मेन्द्र - ठीक है मैं - गुस्सा है धर्मेन्द्र - नहीं यार बस तुझे समझाना है। मैं - बोल क्या हुआ धर्मेन्द्र - यार इतना पिण्णा कुछ नहीं बचेगा तेरा यार एक लड़की के लिए इतना कुछ। जिस मां-बाप ने जन्म दिया है उसके लिए भी कुछ कर। यार मैं मानता हूं तू मुझे बेहतर समझता है तू सबको अच्छे से समझाता है। तुझमें वो क्षमता है कि दूसरे को मोटिवेट कर सके। भाई तूही टूट जाएगा ऐसे तो कुछ नहीं होगा किसी का? समझ भाई अभी इग्नोर कर उसे। (उसने मुझे बहुत समझाया अच्छा गलत सब कुछ) मैं - थैंक्स यार मैंने मन बनाया शाम में प्रतीक्षा से बात करूंगा कॉल पर।

शाम को 5 बजे मैंने प्रतीक्षा को कॉल किया। उसकी दोस्त खुशबू ने फोन उठाया। (खुशबू प्रतीक्षा की बेस्ट फ्रेंड थी। खुशबू एक साधारण लड़की थी। उसका बात विचार अच्छा था। सच्चाई कहूं तो खुशबू और प्रतीक्षा बहन की तरह थीं।) मैं - हैलो प्रतीक्षा खुशबू - नहीं आदर्श मैं खुशबू मैं - कैसे हो आप खुशबू जी खुशबू - ठीक हूं आप कैसे हैं मैं - मैं भी ठीक हूं। बस किसी डॉक्टर से दिल का इलाज करवाना होगा। ज़ख्म बहुत गहरा मिला है कल मेरे दिल को। खुशबू - यार आप अब भी गुस्सा हो न प्रतीक्षा पर। मैं - नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। खुशबू - एकचुअली आदर्श प्रतीक्षा बहुत परेशान रहती है। एक लड़का बार - बार उसे तंग करता है। उसे बोलता है कि आपसे बात करेगी प्रतीक्षा तो आपको मारेगा। मैं - हम्म

(फोन स्पीकर में था पीछे धर्मेन्द्र था मुझे नहीं पता था उसने फोन किया और बोला)

धर्मेन्द्र - खुशबू आदर्श को कोई हाथ तो लगाए बहुत पिटेगा। सच्चाई बताऊं न तो अभी हम जा रहे हैं जल्द लौटेंगे लेकिन आने पर न उसे मैंने मारा न उसकी वजह से आदर्श का दिल टूटा है न बताऊंगा जरूर उसको।

ये कहकर धर्मेन्द्र ने फोन काट दिया। गुस्से में वो बाहर चला गया। गेट इतनी तेज़ी से लगाया कि वो लड़का अगर मिल जाए तो उसकी जान ले ले।

उसी शाम मैं 7 बजे बाज़ार गया। रौनक आभूषण में मैं जाकर एक चांदी की अंगूठी ली। अपनी छोटी उंगली से नाप लेकर मैंने वो अंगूठी खरीद ली। वो एक अच्छी अंगूठी थी जिसमें कि ऊपर एक छोटा सा फूल था।

मैंने वो अंगूठी इसलिए खरीदी की क्योंकि एक दिन मैंने प्रतीक्षा को ऑनलाइन शॉपिंग साइट पर इसी तरह की अंगूठी को पसंद करते देखा था लेकिन वो चाँदी के फूल की अंगूठी थी। प्रतीक्षा को वो डिजाइन बहुत पसंद आया था लेकिन उस समय किसी परेशानी के वजह से वो उस अंगूठी को नहीं खरीद सकी।

मैंने प्रतीक्षा को कॉल किया और मंचूरियन की दुकान पर बुलाया। तब तक मैंने गुलाब की दुकान पर जाकर गुलाब खरीदा।

गुलाब खरीदने के बाद मैंने चॉकलेट की दुकान से उसके लिए चॉकलेट खरीदा । प्रतीक्षा को चॉकलेट बहुत पसंद थी इसलिए मैंने

उसकी पसंद की अंगूठी, चॉकलेट, और उसी की पसंद की पीली गुलाब और एक लाल गुलाब खरीदी। मैं और प्रतीक्षा ने मंचूरियन खाया। उसके बाद मैंने धर्मेन्द्र और सुधाकर के लिए भी मंचूरियन पैक करवा ली क्योंकि धर्मेन्द्र को मंचूरियन ज्यादा पसंद थी।

वहां से हम पार्क पहुंचे। ये पार्क एक शांत पार्क था। बहुत ही सुन्दर पार्क था जिसमें बहुत सारे फूल और बैठने के लिए छोटे-छोटे डिजाइन के कुर्सी लगे हुए थे।

मैं और वो कुर्सी पर बैठे और मैंने उस गुलाब के फूल को उसे दे दिया और प्रतीक्षा को एक बार मैंने फिर से इजहार किया।

मैं - प्रतीक्षा मैं ये जानता हूं तुम उसकी हो लेकिन इस गुलाब को देने का मेरा ये अर्थ है कि मैं जिंदगी के हरपल तुम्हारे साथ रहूंगा। तुम्हारी खुशी में ही मेरी खुशी है। प्रतीक्षा की आंखों में आंसू थे और चेहरे पर एक मुस्कान उसने मेरे हाथ से फूल लिया और मेरे गले से लग गई। बोलने लगी कि मुझे सिर्फ आप चाहिए आप कैसे भी करके उसे हटा दो मैं आपके साथ रहूंगी।

(फोन की घंटी मेरी बज रही थी 6 मिस कॉल धर्मेन्द्र की थी)
मैं - हैलो हां धर्मेन्द्र धर्मेन्द्र - भाई तेरी खुशी में मेरी खुशी है। बिछा दिया उस सागर मोहंती को नसीब अच्छा था ज्यादा नहीं मारा बस सिर फोड़ के भेज दिया है। मैं - रूम पर तुझसे बात करता हूं। धर्मेन्द्र - और हां उसे ये भी बता दिया है कि "दोस्ती तो बहुत प्यारी है मुझे और मेरे दोस्त के प्यार के बीच में आया तो फिर पिटेगा वो।" मैं - अच्छा मैं आता हूं।

फोन कट होते ही प्रतीक्षा बोली कौन था आदर्श। मैं - धर्मेन्द्र प्रतीक्षा - क्या बोला उसने? मैं - कुछ नहीं यार मैंने अंगूठी निकाल कर उसके हाथ में पहनाई और चॉकलेट देते हुए कहा कि अब सागर बीच में आए तो बोलना पहले आदर्श से लड़े। फिर बताता हूं उसकी औकात। 8.30 हो गए थे मैंने प्रतीक्षा को कहा - जान अब जाने का वक्त हो गया चलता हूं।

प्रतीक्षा ने जोर से मुझे गले लगाया और एक प्यारा सा चुम्बन उसने मेरे होठ पर किया और बोली आप सिर्फ मेरे हो और मेरे ही रहना।

मैं - हां मैं तुम्हारा ही रहूंगा। प्रतीक्षा - अब कब आओगे। (मैं उसे सच्चाई नहीं बताना चाहता था क्योंकि मैं उसे देखना चाहता था कि सच में वो प्यार भी करती है या फिर झूठे प्यार का नाटक करके किसी और को चाहती है।) मैं - 2 महीने बाद प्रतीक्षा - अपना ख्याल रखना। मैं - आप भी अपना ख्याल रखना क्योंकि आपसे ही तो हम हैं।

फिर मैं और प्रतीक्षा अपने-अपने गेस्ट हाउस के लिए निकल पड़े। दिल मेरा उससे बहुत प्यार करता था लेकिन आज मैंने उसे ये बात सही से नहीं बताई क्योंकि मैं जानता था कि अगर मैं इसके सामने अपने दिल की बात रख दूंगा तो मैं अपनी साइट पर नहीं जा पाऊंगा। जो भी हो मैं कमरे में पहुंच कर बैग में सामान रखा और धर्मेन्द्र को मंचूरियन दिया।

उसने पूछा कि मैडम से मिलने के बाद जाने का तो मन नहीं हो रहा है मन कर रहा है उसके साथ ही रह जाऊं।

धर्मेन्द्र - भाई प्रतीक्षा या दीक्षा कोई काम नहीं आयेगी पहले काम देख उसे अभी भूल जा और अभी काम में लग जा। जल्दी से खाना खाकर हम तैयार हो गए और कैब बुलाया। कैब के आते ही सामान रखा और मैसूर रेलवे स्टेशन के लिए निकल पड़े।

मैं जब मैसूर रेलवे स्टेशन पहुंचा तो मैं शॉक हो गया क्योंकि वहां मैंने प्रतीक्षा को देखा। वो खड़ी थी मैं सोच में पड़ गया कि ये यहां क्या कर रही है?

मैं - प्रतीक्षा तुम यहां। प्रतीक्षा - हम्मम मैं - कुछ काम था क्या?
प्रतीक्षा - नहीं बस किसी खास से मिलने आई हूं। मैं - कौन?
प्रतीक्षा - है कोई।

मैंने धर्मेन्द्र को अपना बैग दिया और कहा तू सीट के पास रख दियो वैसे भी जाना तो मुझे और धर्मेन्द्र को साथ में ही था।

मैं - कौन है बताओ न? प्रतीक्षा - क्या कीजिएगा आप जानकर?
मैं - बस जानना है। प्रतीक्षा - आप से ज्यादा खास कौन हो सकता है? मैं - (मुस्कुराते हुए) अच्छा इतने भी खास नहीं हैं हम।

प्रतीक्षा - और किसी के लिए नहीं होंगे मेरे लिए तो खास हैं न आप।
मैं - अच्छा ऐसा क्यों? प्रतीक्षा - क्योंकि मैं आपसे प्यार करती हूं।
मैं - कितना ? प्रतीक्षा - बेपनाह मोहब्बत करती हूं।

मैं - इतना भी प्यार मत कीजिए कि दूर जाने पर मेरे बिना रह न सके।

प्रतीक्षा - दूर जा रहे हैं न फिर भी दिल तो आपका मेरे पास है न।

मैं - अब जाकर कुछ पते की बात बोली है आपने।

प्रतीक्षा - यार मुझे कभी धोखा नहीं न दीजियेगा।

मैं - नहीं यार लेकिन ये बात बार - बार क्यों पूछते हैं ?

प्रतीक्षा - बस ऐसे ही। (मैं ट्रेन के आने से पैंतालीस मिनट पहले आ गया था)

प्रतीक्षा - अच्छा एक बात पूछूं।

मैं - हां पूछिए।

प्रतीक्षा - अगर कल को मैं आपको धोखा दे दूं तो आप मेरे साथ क्या करोगे?

मैं - कुछ नहीं। मैं क्या कर सकता हूं?

तभी आवाज़ आती है - यात्रीगण कृपया ध्यान दें। गाड़ी संख्या 12781 स्वर्ण जयंती सुपरफास्ट एक्सप्रेस जिसके आने का निर्धारित समय 10 बजकर 10 मिनट से 1 घंटे 40 मिनट कि देरी से चल रही है ये गाड़ी प्लेटफॉर्म संख्या 2 पर खड़ी है। यह गाड़ी 11 बजकर 50 मिनट पर प्लेटफॉर्म से रवाना होगी। यात्री को हुई असुविधा के लिए हमें खेद है।

प्रतीक्षा - काश 1 घंटे और लेट हो जाती।

मैं - जाने नहीं देना है क्या?

प्रतीक्षा - जाने तो देना है लेकिन क्या करूं? आपके बिना दिल नहीं लगेगा।

ट्रेन का हॉर्न बजता है। ट्रेन धीरे-धीरे आगे बढ़ती है। प्रतीक्षा ने तुरंत मेरे सिर को पकड़ा और एक प्यार भरी चुंबन देती है और कहती है आई लव यू।

मैं - लव यू टू।

ये कहकर मैं भाग कर गेट पर जाता हूँ और धर्मेन्द्र गेट पर होता है मैं ट्रेन में चढ़ता हूँ। ट्रेन धीरे-धीरे गति में बढ़ती है। जिस प्रकार ट्रेन गति में बढ़ रही होती है वैसे ही प्रतीक्षा की आंखों के अश्रु भी गति से गिरते जाते हैं। मैं ट्रेन से कहता हूँ रो मत पागल आऊंगा जरूर। ये कहकर मैं और धर्मेन्द्र सीट पर बैठते हैं। रात का वक्त था मुझे जल्दी नींद आ गई मैं अपनी सीट पर जाके सो जाता हूँ।

रास्ते भर उसका कॉल आता है बहुत कुछ बातें होती हैं अगले दिन रात को मैं भोपाल पहुंच जाता हूँ।

मेरी साइट नर्मदा-क्षिप्रा नदी पर चल रहे एक मल्टीपरपस प्रोजेक्ट की होती है। धर्मेन्द्र की साइट कुंदालिया बहुउद्देशीय डैम पर चल रहे एक प्रोजेक्ट पर होती है। सब कोई एक-दूसरे को बाय कह कर निकल जाते हैं अपनी-अपनी मंजिल के लिए। मुझे रात को ही देवास की बस मिल जाती है। जो कि 6.30 में मुझे देवास छोड़ देती मैं उससे निकल गया।

साइट पर मुझे एक महीने रहना था एक दिन में 10 बार प्रतीक्षा का फोन आता था जिस वजह से मुझे अपने काम में दिक्कत आने लगी। एक दिन मैंने उसे ब्लॉक कर दिया मैंने सोचा कि शाम के समय जब कमरे में जाऊंगा तब अनब्लॉक करूंगा।

मुझे क्या पता था बात बिगड़ जाएगी? उसने फोन पर मुझे बहुत सुनाया।

प्रतीक्षा - तुम्हें मुझसे प्यार ही नहीं था तो क्या करने आए मेरी जिंदगी में।

मैं - तुम काम के वक्त फोन करोगी तो मैं क्यों उठाऊंगा तुम्हारा

फोन, मुझे भी बहुत सारे काम रहते हैं। तुम्हारे चक्कर में लगा रहा तो कंपनी मुझे निकाल देगी।

प्रतीक्षा - तुमने मुझे ब्लॉक कर दिया क्यों ? तुमने मेरी लाइफ खराब कर दी।

मैं - ऐसी कोई बात नहीं है।

रोज हमारे झगड़े होने लगे बस एक दिन हमने फैसला किया कि हम अब अलग होंगे और हम दोनों अलग हो गए। मैं रोज - रोज के इस झगड़े से परेशान हो चुका था मुझे मेरा काम भी देखना था और उसे भी।

प्रतीक्षा को सिर्फ मुझसे बात करना था चाहें मैं काम करूं या नहीं वो मुझे इतना ज्यादा परेशान कर चुकी थी कि मैंने खुद उसे इस बारे में बताया कि अलग हो जाएं तो बेहतर रहेगा। अलग होने से एक दिन पहले उसका कॉल आता है।

प्रतीक्षा - मैंने एक गलत इंसान से प्यार कर लिया मुझे समझना चाहिए था कि कुत्ते को घी हज़म नहीं होता है।

(वो घुमा-फिरा कर कहना चाह रही थी कि मैं बीटेक एक इंचार्ज हूं और तुम एक सुपरवाइजर। एक बीटेक इंचार्ज के अन्तर्गत बहुत सारे डिप्लोमा वाले होते हैं और उससे नीचे सुपरवाइजर होता है।)

मैं - पॉलिटिक्स मत बनाइए प्यार को।

प्रतीक्षा - मैं करूंगी देखते जाओ और हां अलग हो रही हूं तुमसे बहुत मिलेंगे मुझे । कमी नहीं है यहां लड़कों की।

मैं - ठीक है

प्रतीक्षा - आगे से शकल मत दिखाना।
मैं - तुम भी मत दिखाना।
प्रतीक्षा - ठीक है।

इस तरह से मेरे और उसके प्यार का अंत हो जाता है ।

3

तैरे बगैर

किसी भी व्यक्ति को पहले ये एहसास नहीं होता कि कौन सा आदमी उसके अच्छे के लिए बोल रहा है कौन उसके बुरे के लिए? लेकिन बाद में जब एहसास होता है तो पछता करके भी कोई फायदा नहीं होता।

परी के लाख समझाने के बाद भी प्रतीक कभी भी नहीं मानता था क्योंकि प्रतीक परी के प्यार को मजाक में लेता था। प्रतीक परी से प्यार करता था ऐसा नहीं था कि वो परी से प्यार नहीं करता था लेकिन परी की एक भी बात वो नहीं सुनता था। परी के प्यार को प्रतीक मजाक में लेता था। जब भी परी प्रतीक से बात करने को जाती थी प्रतीक बात को टाल देता था। परी को देखते ही प्रतीक व्यस्त हो जाता था ताकि वो उसे अनदेखा कर सके।

एक दिन प्रतीक अपने दोस्तों के साथ मस्ती मज़ाक करते हुए जा रहा था। परी ने प्रतीक को जोर की आवाज़ लगाई लेकिन प्रतीक ने उसे अनदेखा कर दिया। प्रतीक ने उसे ऐसे अनदेखा किया जैसे वो परी को जानता ही न हो। प्रतीक पूरे दिन मस्ती, मजाक, बदमाशी

करता रहता था। क्लास बंक करके भी वो भाग जाता था। वो और उसके ग्रुप के लड़के पहले ही तैयार रहते थे। क्लास के दरवाज़े पर एक लड़का खड़ा रहता था। जैसे ही वो देखते कि इतिहास या हिंदी की क्लास होने वाली है वो खिड़की से नीचे कूद जाते। खिड़की खुली हुई थी जिसकी वजह से उससे आना-जाना आसान था और उनका क्लास भी नीचे की फ्लोर में था इसलिए वो आराम से क्लास बंक करके भाग जाते थे।

दरअसल प्रतीक ऐसा नहीं था। प्रतीक 10वीं में अच्छे मार्क्स से उत्तीर्ण था साथ ही वो अपने क्लास का टॉपर था। 11वीं में आते ही उसके कुछ अच्छे दोस्त बन गए जो बंक मारते थे। मजाक मस्ती करते थे तो प्रतीक भी धीरे-धीरे उनके साथ रह कर उनके जैसा बन गया। एक शरीफ सा दिखने वाला लड़का एक मवाली की तरह बनता जा रहा था। अजीब से अपने बाल कटवा लिए थे साथ ही उसमें अजीब से कलर और शर्ट के बटन खुले हुए रहते थे। एक आवारागर्द लड़के से कम नहीं था वो। प्रतीक बदमाशों की तरह बात करने लगा था।

परी ने एक दिन मन बनाया कि आज तो किसी भी हाल में प्रतीक से बात करना है। सुबह जब प्रतीक आया और क्लास में आया तो परी ने उसका हाथ पकड़ा और बोला - परेशानी क्या है तुम्हारी?

प्रतीक हंसते हुए बोला - कुछ नहीं है मेरी परेशानी, परेशानी तो आपको है न तभी तो आपने मेरे हाथों को पकड़ कर यहां लाया।

परी - प्रतीक मैं मजाक नहीं कर रही हूं तुम मुझे इग्नोर कर देते हो मेरा फोन भी नहीं उठाते। यहां तक कि मैसेज का रिप्लाई नहीं देते।

प्रतीक परी को पकड़ता है और दीवार में लगा कर बोलता है मैडम जी कतई जहर लगती हैं आप।

परी - छी तुमने गुटखा खाया है क्या?

प्रतीक - हां तो

परी - तुम कब सुधरोगे प्रतीक? तुम्हारे मार्क्स देख कर मुझे रोना आता है तुम्हारे हर पेपर में इतने कम मार्क्स आते हैं।

प्रतीक - पढ़ के कौन बड़ा आदमी बना है? मैडम जी आप साथ है न तो बस आप पढ़िए और हमारे बच्चे को पढ़ा देना। मैं नहीं पढ़ूंगा अब।

प्रतीक ये कह कर निकल गया। प्रतीक क्लास गया बैग उठाया और अपने दोस्तों के साथ खिड़की से नीचे कूद गया। हिस्ट्री वाले सर आ रहे थे। प्रतीक और उसके साथी को कूदते हुए उन्होंने देख लिया था।

हिस्ट्री वाले सर - कौन-कौन भागा है अभी।

पूरी क्लास शांत थी। कोई कुछ नहीं बोल रहा था।

हिस्ट्री वाले सर - मैं जानता हूं कौन-कौन भागा है मुझे बता दो तुम लोग।

परी खड़ी होती है और बोलती है सर मैंने और किसी को भी देखा लेकिन प्रतीक मिश्रा भागा है सर। वो बोलता है कि आपकी क्लास बोरिंग है इसलिए वो भाग जाता है ।

हिस्ट्री वाले सर तुरंत प्रिंसिपल को फोन करते हैं।

हिस्ट्री वाले सर - प्रिंसिपल सर मेरे आने से पहले प्रतीक मिश्रा लड़कों को अपने साथ लेकर भाग जाता है आप उसके अभिभावक को इस बात की जानकारी दें।

प्रिंसिपल - मैं उनके पिता को अभी ऑफिस बुलाता हूं।

हिस्ट्री वाले सर - धन्यवाद सर।

कुछ ही समय के बाद प्रतीक के पापा आते हैं वो अपने साथ में प्रतीक को भी लाते हैं।

प्रिंसिपल - मिश्रा जी आपका बच्चा क्लास बंक करके भागता है पढ़ने का कभी इसका जी भी नहीं करता। मार्क्स अच्छे लाने से कुछ नहीं होता।

प्रतीक - सर लेकिन मैं क्लास मॉनिटर को बता करके जाता हूं।

हिस्ट्री सर - अच्छा रुको उनसे ही पूछता हूं।

हिस्ट्री सर क्लास मॉनिटर को बुलाते हैं। प्रतीक ये जानता था कि परी उसे बचा लेगी क्योंकि क्लास मॉनिटर ही परी थी। प्रतीक इस बात से खुश था कि वो आज भी बच जाएगा। मन ही मन वो खुद को शाबाशी भी दे रहा था कि क्या किस्मत पायी है? क्लास मॉनिटर को ही मैंने तो सेट कर लिया है और वो भी मेरे प्यार में लट्टू है।

प्रतीक के पापा और प्रिंसिपल बातें किए जा रहे थे। हिस्ट्री सर बराबर प्रतीक की बुराई किए जा रहे थे। ये बुराई नहीं प्रतीक के लिए एक शब्दों के तमाचे का काम कर रहा था क्योंकि उसे पता था घर पर बवाल होने वाला है। पापा उसे बहुत मारेंगे।

एक पल को वो खुश था कि परी बचा लेगी।

परी आती है और प्रतीक की तरफ देखती है। प्रतीक उसको देख कर हंसता है क्योंकि वो जानता है वो उसे बचा लेगी। प्रतीक के हंसने पर परी का गुस्से वाला रिएक्शन देख प्रतीक परेशान हो गया कि कहीं ये सारा राज न खोल दे।

हिस्ट्री सर - परी तुम्हें ये बता कर जाता है क्या कि ये खिड़की से कूद कर भाग रहा है।

परी - नहीं सर झूठ बोल रहा है प्रतीक। इसने मुझे कभी कुछ नहीं बताया। इन्फैक्ट ये अपने साथ दो-तीन लड़कों को डरा कर ले जाता है कि अगर वो इसके साथ नहीं गए तो उनके घर वालों को उनके नशे के बारे में बता देगा। यहां तक कि क्लास में मुझसे ये बात सही से नहीं करता। ये कहता है कि मॉनिटर कुछ नहीं कर सकती।

प्रिंसिपल - प्रतीक !!! तुम्हारी समझदारी घास चरने गई है। नहीं पढ़ना है तो बोल दो। तुम इस क्लास के दादा हो क्या? गैंगेस्टर बनना चाहते हो क्या? नहीं पढ़ना है बोल दो तुम्हारे चक्कर में मैं और बच्चों की पढ़ाई खराब नहीं कर सकता।

प्रतीक के पापा - धन्य है तू बाप को इतना सुनबा करके खुश तो है न। आज तक कभी डांट नहीं सुनवाई अब सुनना पड़ रहा है। तेरे जैसे बच्चे किसी काम के नहीं हैं। तू घर चल घर में तुझे बताता हूं।

ये कहकर प्रतीक के पापा चल जाते हैं क्योंकि वो प्रतीक की बुराई नहीं सुन सकते थे अब। प्रतीक को भी सर डांट कर क्लास भेज देते हैं।

परी - सर रास्ते में मुझे परेशान नहीं करे प्रतीक क्योंकि मुझे इससे डर लगता है।

हिस्ट्री सर - डरने की जरूरत नहीं है कुछ नहीं करेगा वो और कुछ करे तो पुलिस को फोन कर देना बाकी हम देख लेंगे।

परी क्लास में जाती है लंच का वक्त हो जाता है। परी क्लास में किसी को भी नहीं देखती है सब लंच करने बाहर गए होते हैं बस लास्ट बेंच में प्रतीक को बैठा देखती है। क्लास की खिड़की भी बंद थी एक खिड़की खुली थी। परी ने अपने बैग से लंच निकाला और जैसे ही बाहर जाने के लिए निकली। पीछे से आवाज़ आती है।

"मेरा लंच भी खा लीजिएगा मुझे आज भूख नहीं है या नहीं खा सकते है तो गाय को खिला दीजियेगा।"

पीछे मुड़कर जब परी देखती है तो प्रतीक बोला होता है।

परी - इतना गुस्सा मुझ पर।

प्रतीक - नहीं

परी - अच्छा जी आप कब से गुस्सा होने लगे मेरे बाबू।

प्रतीक गुस्से से आता है और परी को पकड़ कर दीवार में चिपका कर बोलता है - मैं किसी का बाबू सोना नहीं जितना बोला उतना करिए। नहीं कर सकते तो बोल दीजियेगा।

परी - आप क्या समझते हो मैं आपकी गुलाम हूं? क्या समझ रखा है? आपने मेरी बात सुनते नहीं तो मैं आपकी क्यों सुनूं?

प्रतीक - तो मेरी शिकायत करने वाली होती कौन हो तुम? तुम खत्म लड़की हो तुम्हारे में दिमाग नहीं है। क्या हो तुम? प्रतीक ने इतनी जोर से बोला कि क्लास गूंज पड़ी। परी खत्म लड़की वाली बात को लेकर खींच कर एक तमाचा प्रतीक के गाल में जड़ दिया। प्रतीक इतना गुस्सा हो गया कि उसने गुस्से में एक मुक्का जोर से दीवार में मारा जिससे उसके हाथ से खून निकलने लगा प्रतीक ने बैग उठाया और परी को बोला - आज मेन गेट से निकलूंगा देखता हूं कौन रोकेगा? और हां कभी बात मत करना मुझसे।

ऐसा नहीं था कि प्रतीक परी को प्यार नहीं करता था, परी को प्रतीक बेपनाह मोहब्बत करता था। वो परी से बहुत प्यार करता था लेकिन कहते हैं न "विनाशकाले विपरीत बुद्धि" प्रतीक भी वैसे ही कुछ गलत लड़कों के संगत में पड़ गया। गलत संगत में वो इतना डूब चुका था कि उसे पता ही नहीं चला कि वो गलत कर रहा है या सही।

एक पढ़ने वाला लड़का जो कि हर पल अपना ध्यान पढ़ाई में लगाए रखता था। उसने एक लड़की से प्यार किया। वो लड़की भी एक अच्छी लड़की थी। एक संस्कारी और सुशील लड़की थी। वो पढ़ने में भी अच्छी थी परन्तु उस लड़के ने उस लड़की से ज्यादा जिंदगी बर्बाद करने पर उतारू हो चुका था। एक लड़का जो कि शांत और मृदुल स्वभाव का था वो आज एक आवारा लफंगा बन चुका था।

प्रतीक चला गया क्लास खत्म हुई और सब जाने लगे। परी भी घर चल गई लेकिन पूरे रास्ते में वो ये देखती जा रही थी कि काश प्रतीक आकर उससे बात करे। उसे कहां पता था जो प्रतीक उसके प्यार में पागल था वो अब अपनी जुनूनियत दिखाएगा। परी उस बात को पूरी रात सोचती रही।

प्रतीक फेसबुक पर ऑनलाइन था। परी ने जब ये देखा तो प्रतीक को मैसेज किया लेकिन उसके मैसेज का कोई रिप्लाई नहीं आया। परी बहुत ज्यादा उदास हो गई थी।

अगले दिन प्रतीक क्लास आया और उसने पूरे क्लास के सामने परी को पकड़ कर बोला। थप्पड़ मार के आपने गलती कर दी है ये प्यार जितना अच्छा था वो अब खराब होगा।

परी - प्रतीक हाथ छोड़ो मेरा सब देख रहे हैं।

प्रतीक - आप बेवफा हो मुझे तो पहले ही पता था। आप मुझसे प्यार और किसी से इजहार करती हो।

परी - प्रतीक जस्ट शट अप!!

प्रतीक - मैं तेरा गुलाम नहीं हूँ जो चुप हो जाऊँ।

परी - मेरा हाथ छोड़ो।

प्रतीक - नहीं छोड़ूँगा जब तक तुम स्वीकार नहीं करोगी कि तुम बेवफा हो और बदचल.....

एक जोरदार थप्पड़ की आवाज़ आती है। परी ने प्रतीक को एक जोरदार थप्पड़ मारा।

परी - समझते क्या हो तुम अपने आपको? कहीं के बदमाश हो? क्या हो तुम?

प्रतीक के दोस्त उसे खींच कर लाते हैं। प्रतीक बहुत ज्यादा गुस्से में होता है। चुपचाप आ कर बैठ जाता है।

हिंदी वाली मैडम आती हैं। रोल नंबर वन कनिष्का - येस मैडम, रोल नंबर टू प्रिया - येस मैडम रोल नंबर बीस प्रतीक मिश्रा ये तो आया ही नहीं होगा। इनका तो क्लास से कोई वास्ता ही नहीं है।

तभी पीछे से आवाज़ आती है येस मैडम - प्रतीक बोलता है।

हिंदी वाली मैडम - प्रभु बहुत दिन के बाद दर्शन हुए आपके। कहां थे आप?

प्रतीक - मन नहीं था आने का।

हिंदी वाली मैडम - आज कैसे मन बन गया आने का और आपका मन भी इतना अच्छा है कि आप क्लास चलते वक्त नहीं जब टेस्ट होता है तब आते हो। साबित क्या करना चाहते हो? बगैर पढ़े आपके नंबर आ जाते हैं इतने अच्छे। आज टेस्ट देने ही आए हो या दीवार से कूद कर बंक करने।

प्रतीक - मैडम टेस्ट देने आया हूं।

हिंदी वाली मैडम - वो तो पता चलेगा टेस्ट के बाद ही।

टेस्ट शुरू होता है और मैडम सबको अलग-अलग बैठा देती है। प्रश्नपत्र बांट दिए जाते हैं। 30 मिनट में 3 सवालों के जवाब लिखने थे। प्रतीक ने 15 मिनट में लिखा और मैडम को पेपर दे दिया। प्रतीक के बगल वाली बेंच पर परी होती है। प्रतीक अपने बैग से ब्लेड निकालता है और परी को बुलाता है।

प्रतीक - परी सुन।

परी जैसे ही देखती है प्रतीक अपने हाथ में ब्लेड से काटे जा रहा होता है। परी झट से रुमाल लेकर उसके हाथ के पास जाती है। प्रतीक ने ब्लेड हटाया। मैडम ने परी को बहुत सुनाया। मैडम ने पेपर लिया और चली गई।

प्रतीक हंसते हुए बोला - मैडम जी बदला लूंगा जरूर।

ये कहकर प्रतीक चला जाता है। परी के मन में अब प्रतीक को लेकर डर बैठ जाता है क्योंकि पहली बार परी ने उसकी जुनूनियत

को देखा था जो कि सिर्फ ये दिखाना था कि वो परी से बहुत प्यार करता है। असलियत क्या थी इससे परी अनभिज्ञ थी? प्रतीक सिर्फ बदला लेना जानता था।

प्रतीक के मन में बदले की आग जल रही थी उसने अपने दोस्त से बाइक लिया और मार्केट चला गया। बदले की आग इस कदर उसके मन में थी कि कहा न जाए। जब कल वो घर गया था तब उसके पापा ने उसे बहुत मारा था और उसको बचाने के चक्कर में उसकी मां को भी चोट लग गई।

प्रतीक दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार करता था लेकिन जब उसे अपनी मां की चोट दिखी तो परी के लिए प्यार खत्म हो गया। अब बस उसके मन में एक ही बात रह गई थी। वो बात थी "बदला" वो भी किसी भी हालात में।

मार्केट पहुंचते ही प्रतीक सबसे पहले शराब की दुकान पर गया और वहां जाकर वो पीने लगा। उसे पता था कि परी छुट्टी में मार्केट आयेगी। पहले ही प्रतीक ने बहुत ज्यादा पी ली जिससे कि वो पीकर एकदम टल्ली रह सके और परी को सुना सके। परी ने मार्केट में अपने भाई को बुला रखा था ये बात प्रतीक को नहीं पता थी। प्रतीक पीने के बाद स्कूल गया और वहां उस लड़के को बिठाया जिसकी बाइक थी। उसके बाद प्रतीक उसे मार्केट लाया।

प्रतीक - कुछ पिएगा तू भाई

वो लड़का - शराब

प्रतीक - चल फिर

वो लड़का - प्रतीक मैं नहीं पियूंगा आज क्योंकि अगर दोनों ने पी लिया तो फिर बाइक कौन चलाएगा?

प्रतीक - ये भी सही बात है। कोल्ड ड्रिंक पी तू मैं शराब पीता हूं। प्रतीक पीता गया। पीने के चक्कर में वो इतना मस्त था कि न उसे अपनी हालत का पता था ना ही उसे उस समय के हालात का।

प्रतीक ने पीया और उसके बाद पैसे देकर उस लड़के से कहा कि ला बाइक की चाभी।

वो लड़का - भाई इतना पी रखी है बाइक कैसे....

प्रतीक - मैं चलाऊंगा तू चाभी दे बस।

वो लड़का - भाई लेकिन कहीं एक्सीडेंट हो गया तो....

प्रतीक - तू बाइक की चाभी दे तेरा एक्सीडेंट नहीं आज परी की लेनी देनी करनी पड़ेगी। उसने मुझे थप्पड़ मारा।

बाइक की चाभी लेकर प्रतीक बाइक स्टार्ट करता है और उस लड़के को लेकर निकल जाता है। परी रास्ते में अपनी एक दोस्त के साथ आ रही होती है। प्रतीक बहुत तेज़ गति से आता है और एक ब्रेक लगाता है। एक जोरदार आवाज आती है। प्रतीक वाली बाइक एक खड़ी कार के बगल में लगी। प्रतीक के हाथ में चोट लग गयी। प्रतीक बाइक से उतरा।

प्रतीक - तू क्यों मेरे रास्ते में आती है ? सुकून नहीं है क्या तुझे?

परी - प्रतीक यार आप समझो न प्लीज यार मान जाइए एक बार मेरे लिए अच्छा बन जाइए।

प्रतीक - ओए तेरे चक्कर में मेरे घर में कलेश हुआ है। तेरे लिए तो अब मैं कुछ नहीं करूंगा बर्बाद कर दूंगा तुझे।

परी - प्रतीक शांत हो जाओ लोग देख रहे हैं।

प्रतीक - लोग क्या करेंगे मेरा कुछ भी नहीं कर सकते।

परी - प्रतीक तुम्हें पागलपन दिखाना है दिखाओ मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।

प्रतीक - पड़ेगा न।

ये कहकर प्रतीक अपना रुमाल से बंधा हाथ खोलता है उसमें परी लिखा होता है। हाथ प्रतीक का बहुत ही बुरी स्थिति में था। पीछे परी का भाई सब सुनता है और आते ही प्रतीक को मारने लगता है।

प्रतीक कुछ समझ पाता उसने प्रतीक को 10-12 बेल्ट जोर की मार दी। प्रतीक की हालत अब इस कदर थी कि न वो कुछ कर सकता था न कुछ बोल सकता था। प्रतीक ने पीछे बाइक वाले दोस्त को देखा वो वहां नहीं था।

परी के भाई के दोस्त ने प्रतीक को पकड़ा और एक सुनसान जगह ले जाने लगे। तभी पीछे से 3 बाइक आकर रुकती है। प्रतीक खून से

रंगा हुआ था। बाइक से 5 लड़के उतरे और परी के भाई को कहा कि इसे यहीं मारना है।

परी के भाई ने परी को उसके दोस्त के साथ भेज दिया। परी का रो रोकर बुरा हाल था। परी की एक गलती की सजा प्रतीक भुगत रहा था।

परी का भाई - यहां पुलिस का डर है। वैसे भी अब ये कुछ भी नहीं कर सकता। वैसे तुम्हारी क्या दुश्मनी है इससे?

बाइक वाला लड़का - साला हर बार पढ़ कर फर्स्ट आ जाता है और प्राइज लेता है।

बोलते ही बोलते बाइक वाले लड़के ने इसी गुस्से में उसने तीन-चार मुक्के प्रतीक को मार दिए। प्रतीक के मुंह से खून निकल रहा था। बेहोश हो चुका था। लड़कों ने उसे वहीं फेंका और चले गए।

प्रतीक के बाइक वाले दोस्त ने उसके साथ रहने वाले लड़के को बुलाया। आनन-फानन में प्रतीक को सरकारी अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टर ने प्रतीक की हालत देखी तो पूछा किससे हुआ है?

प्रतीक का दोस्त - बाइक से दीवार में टक्कर मार दी। प्रतीक के दोस्त जानते थे कि अगर सच्चाई बताई तो फिर पुलिस केस होगा और हम बदला भी नहीं ले पाएंगे। पुलिस केस होने पर कॉलेज और दोस्त कोई भी प्रतीक को सपोर्ट नहीं करेंगे। जिससे प्रतीक और

बदनाम होगा। प्रतीक के सिर में थोड़ी चोट आयी होती है। प्रतीक का इलाज चलता रहता है। प्रतीक के दोस्त ने प्रतीक के पापा को फोन किया। प्रतीक के जिस दोस्त ने प्रतीक के पापा को फोन किया। उसके पापा उसे जानते थे। प्रतीक के उस दोस्त का नाम राज था।

प्रतीक के पापा - हैलो

राज - नमस्ते अंकल

प्रतीक के पापा - हां बोलो राज।

राज - अंकल प्रतीक का एक छोटा एक्सीडेंट हो गया है। वो आपसे बात करने आ रहा था क्योंकि उसे टेक्निकल पढ़ना था इसलिए वो आज हम सबको बता कर जाने वाला था। रास्ते में उसका एक्सीडेंट हो गया।

प्रतीक के पापा - राज मै अभी आता हूं तुम कौन से हॉस्पिटल में हो।

राज - जननायक सरकारी अस्पताल में हैं हम।

प्रतीक के पापा - मै आता हूं बेटे।

प्रतीक ने सुबह राज को टेक्निकल एजुकेशन के बारे में बताया था। वो बात भी करना चाहता था लेकिन परी की वजह से सब कुछ खराब हो गया और प्रतीक की ऐसी हालत हो गई। प्रतीक के पापा आते हैं साथ में उसकी मां भी आती हैं। मां का रो-रोकर बुरा हाल

था। अंदर प्रतीक के सिर का इलाज चल रहा था। प्रतीक का इलाज हो जाने के बाद डॉक्टर बाहर आए।

प्रतीक के पापा - डॉक्टर साहब प्रतीक कैसा है अब।

डॉक्टर - भगवान से प्रार्थना कीजिए वो ठीक है उसे ज्यादा चोट नहीं थी। इलाज हो गया है। अब आप लोग उससे मिल सकते हैं लेकिन उसे टेंशन मत देना।

राज - डॉक्टर साहब प्रतीक ठीक हो जायेगा न।

डॉक्टर - टेंशन मत लो यार अब वो ठीक है। प्रतीक की मां को भेजिए उससे मिलने के लिए लेकिन एक हंसी के साथ।

मां - हां डॉक्टर साहब।

डॉक्टर - राज मेरे साथ आना।

राज - हां डॉक्टर साहब आता हूं।

प्रतीक की मां अन्दर गई।

प्रतीक - मां सॉरी। मैं आपका अच्छा बेटा नहीं बन पाया।

मां - बेटे तू सबसे अच्छा बेटा है और मुझे तुझसे कोई शिकायत नहीं है। बेटा बस जल्दी तू ठीक हो जा। तू टेक्निकल एजुकेशन करना। बेटा ठीक हो जा।

प्रतीक - मां आप लोग अभी बाहर जाओ मुझे मेरे दोस्तों से कुछ बात करना है।

मां - बात कर ले बेटे।

डॉक्टर - राज प्रतीक ने ज्यादा पिया था फिर भी बाइक चला रहा था। तुम्हारे कहने पर मैंने उसके घर वालों को नहीं बताया।

राज - सर थैंक्स नहीं तो आज ज्यादा बवाल हो जाता।

डॉक्टर - प्रतीक का खयाल रखना मैंने उसे उल्टी करवाकर सारी शराब उतरवा दी है। तुम और प्रतीक मेरे एक अच्छे दोस्त हो इसलिए नहीं तो प्रतीक को देख कर कोई एक्सीडेंट नहीं लगा मुझे।

राज - सर दरअसल कुछ लड़कों से प्रतीक की दुश्मनी थी उन्होंने प्रतीक को मारा है इस तरह से।

डॉक्टर - मैं जानता हूं पुलिस केस होने पर प्रॉब्लम बढ़ सकती है इसलिए प्रतीक का खयाल रखो। अच्छे से ध्यान देना नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

राज - जरूर डॉक्टर साहब।

राज को जब पता चला कि प्रतीक उसे बुला रहा है तो वो भागते हुए गया।

प्रतीक - थैंक्स यार हॉस्पिटल तक पहुंचाने के लिए।

राज - थैंक्स बाद में उसके भाई के साथ क्या करना है बता? मुझे इतना गुस्सा है न कि बता नहीं सकता क्योंकि मैं नहीं छोड़ूंगा उसे।

प्रतीक - देख अभी लड़ना नहीं है।

राज - तो कब ?

प्रतीक - पहले मुझे ठीक हो जाने दो। मुझे भी बदला लेना है सबसे लेकिन अभी नहीं क्योंकि अभी टाइम अपना नहीं है।

राज - ठीक है प्रतीक तुझे यहां 5-6 दिन रखेंगे जब तू ठीक हो जाए तब आना क्लास।

प्रतीक - हां

राज - मैं तुझसे मिलने आता रहूंगा।

प्रतीक - यार अभी कुछ मत करना तुम लोग मेरी रिक्वेस्ट है क्योंकि अगर तुमने कुछ किया तो प्रॉब्लम बढ़ सकती है। परी अगर कुछ पूछे तो बोलना कुछ नहीं पता। उसे कुछ पता नहीं चलना चाहिए।

प्रतीक को चोट ज्यादा लगी थी तो प्रतीक को ठीक होने के लिए समय चाहिए था। पूरे स्कूल में हल्ला था कि प्रतीक को परी के भाई ने मारा है। परी का भाई डॉन की तरह परी के क्लास में आता था। जिन लड़कों ने बाइक से जाकर प्रतीक को मारा वो भी फेमस हो गए क्योंकि प्रतीक की हत्या की कोशिश भी की लेकिन उन्हें जेल नहीं हुई।

प्रतीक को सब डरपोक समझने लगे थे। परी का भाई बदमाश की तरह सब जगह लड़ते फिरता अब उसका डर खत्म हो चुका था।

परी का भाई खुद को एक गुंडा समझने लगा। वो रोज स्कूल आता और लड़कियां छेड़ता। स्कूल के बच्चों को नशे का सामान लाकर देता था। परी का भाई अब एक गैंग बनाकर घूमने लगा।

20 दिन बाद

स्कूल शुरू हो चुका था। क्लास लग रही थी। परी के क्लास में आज कम बच्चे आए थे। लंच का टाइम हुआ सब मैदान में घूम रहे थे। परी का भाई भी लंच में घूम रहा था।

दरअसल वो उस स्कूल का नहीं एक सार्वजनिक मैदान था जिस पर स्कूल का और सरकार का हक था इसलिए परी का भाई घूमता रहता था। परी का भाई उन 6 लड़के जिन्होंने प्रतीक को मारा था उसके साथ और कुछ लड़कों के साथ बातचीत कर रहा था। थोड़े समय बाद 5 बाइक रुकती हैं। जिसमें हर बाइक पर 3 लड़के थे रुकते हैं। 15 लड़के आ गए कुछ स्कूल के भी लड़के आ गए। उसके बाद सबने परी के भाई, 6 लड़के जिन्होंने प्रतीक को मारा था उन्हें और परी के भाई के साथ वाले लड़कों को ताबड़तोड़ मारने लगे। एक लड़ाई सा माहौल हो गया। एक रणभूमि बन चुका था कॉलेज। 15 लड़के और स्कूल के लड़के सबको मारते हैं। उसके बाद वो परी के भाई और उन 6 लड़कों में एक लड़का जिसने प्रतीक को मारा था उसे पकड़ा और बाकी को छोड़ दिया।

तुरंत छात्र संघ के लड़कों की भी बाइक आती है जिसके पीछे से एक लड़का उतरता है। सफेद कुर्ते में वो लड़का होता है। उतरते ही राज से बेल्ट मांगता है और परी के भाई और उस लड़के को बहुत

मारता है। स्कूल के शिक्षक पुलिस को बुला देते हैं। पुलिस आने के बाद मामला शांत होता है।

प्रिंसिपल केबिन में सबको बुलाया जाता है। प्रतीक, राज, छात्रसंघ के लड़के, परी का भाई, वो लड़का जिसने प्रतीक को मारा था, प्रिंसिपल, पुलिस सब कोई आ गए। अब पुलिस को फैसला करना था कि किसको पकड़ा जाए क्योंकि छात्रसंघ के लड़के को पकड़ेंगे तो विरोध ज्यादा होगा। परी के भाई को पकड़ेंगे तो ये होगा कि बेबुनियाद आरोप में उसे पकड़ा जा रहा है। पुलिस परेशान थी कि किसको पकड़ा जाए।

अंत में सारे सबूत और गवाह के आधार पर परी के भाई को अरेस्ट किया गया और उसपर हत्या के प्रयास जैसे आरोप लगाए गए। पुलिस ने प्रतीक को स्कूल की शांति भंग करने के आरोप में अरेस्ट किया। प्रतीक नाबालिग था इसलिए उसे जेल में नहीं बाल सुधार गृह में कुछ दिन के लिए डाल दिया गया। उन 6 लड़के जिन्होंने प्रतीक की मारने की कोशिश की थी उन्हें भी हत्या के प्रयास के आरोप में अंदर किया गया। छात्र संघ के नेता और प्रतीक जमानत पर छूट गए।

कुछ दिन बाद जिला अदालत ने प्रतीक और उसके छात्र संघ के नेता को बरी कर दिया। प्रतीक और उसके दोस्त आज़ाद थे। उनके कारावास और बाल सुधार गृह के दिन खत्म हो गए थे।

प्रतीक के स्वागत में उसके दोस्त और शुभचिंतक आए थे। प्रतीक का भाई और उसकी पूरी फैमिली वहां थी। प्रतीक आज़ाद हो गया चूंकि प्रतीक के बदले की खबर अखबार में बहुत ज्यादा प्रकाशित

थी इसलिए प्रतीक का लोग सपोर्ट करने लगे। प्रतीक एक लेखक भी था तो उसके फॉलोवर्स और सपोर्टर्स बहुत ही ज्यादा थे।

प्रतीक और उसके दोस्त, छात्र संघ के नेता जिला अदालत परिसर में आए। तभी एक जोरदार गोली चलने की आवाज आती है। कोर्ट परिसर में भगदड़ मच जाती है। लगातार 8-10 गोली चलती है। 4 अपराधियों ने प्रतीक, छात्र संघ के नेता और उसके दोस्तों को गोली मार दी थी। सब नीचे गिर गए। पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई की जिसमें वो चारों अपराधी मारे गए।

प्रतीक, उसके दोस्तों को पुलिस हॉस्पिटल ले गई जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सब मारे गए।

अगले दिन जब परी ने ये पढ़ा कि उसके भाई ने प्रतीक और उसके दोस्तों को मारने की सुपारी अपराधियों को दी थी। तो उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा था लेकिन इस गलती के एहसास का क्या फायदा ?

प्रतीक अब इस दुनिया में नहीं रहा परी रौने लगी। उसके बाद उसे याद आया कि प्रतीक ने क्यों कहा था कि जब कोई बिछड़ जाता है तभी लोगों को याद आता है कि वो कैसे रहेंगे? परी अब सोच रही थी कि कैसे रहेगी "तेरे बगैर"। परी को एहसास होना सही था लेकिन अब एक गलती ने प्रतीक को खत्म कर दिया। परी का भाई भी जेल में था।

बस परी और प्रतीक की कहानी यहीं खत्म होती है।